: तृतीय अध्याय :

गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन

तृतीय अध्याय

गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन

प्रस्तावना

3.1 उच्चवर्गीय समाज ।

3.2 मध्यवर्गीय समाज ।

3.3 निम्नवर्गीय समाज ।

3.4 अज्ञानी एवं परंपराप्रिय समाज ।

3.5 जातीयता ।

3.6 अन्याय / अत्याचार ।

3.7 शिक्षा व्यवस्था ।

3.8 निम्नवर्ग का शोषण ।

3.9 आर्थिक विपन्नता ।

3.10 स्वतंत्रता आंदोलन ।

3.11 भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी ।

3.12 व्यसनाधीनता ।

3.13 युवावर्ग ।

3.14 विदेशी प्रभाव ।

3.15 आधुनिक साधनों का आकर्षण ।

3.16 सांस्कृतिक परिस्थिति ।

3.17 विवाह संस्था ।

3.17.1 बहुविवाह ।

3.17.2 अंतर्जातीय विवाह ।

3.17.3 अनमेल विवाह ।

3.17.4 विलंबित विवाह ।

3.17.5 विवाह विच्छेद ।

3.18 परिवार संस्था ।
3.18.1 संयुक्त परिवार ।
3.18.2 एकल या विघटित परिवार ।
3.19 स्त्री - पुरूष संबंध ।
3.19.1 आत्मीक संबंध ।
3.19.2 यौन संबंध ।
3.19.3 सुखमय - दांपत्य संबंध ।
3.19.4 विषम - दांपत्य संबंध ।
3.19.5 वेश्या संबंध ।
निष्कर्ष

प्रस्तावना :-

गोविंद मिश्र जी यथार्थवादी रचनाकार होने से उनके साहित्य में यथार्थपरक चित्रण आवश्य दिखाई देता है। इसी वजह से समाज का यथार्थ चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है। समाज का क्षेत्र व्यापक है, अत: मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन का वर्णन निम्नलिखित मद्दों के द्वारा कर सकते हैं।

3.1 उच्चवर्गीय समाज :-

मिश्र जी एक सजग रचनाकर्मी होने के कारण उन्होंने अपने उपन्यासों में सभी वर्गों का दायरा व्यापक रूप में दिखाया है। उन्होंने समाज के उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले अनेक पात्र एवं परिवारों को "पाँच आँगनोवाला घर" उपन्यास में प्रस्तुत किया है। पंडित नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, विश्वनाथ प्रताप सिंग ऐसे कुछ राजनेता, जो उच्च-उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेखक ने उनके राजनीतिक कार्य का उल्लेख करके उनमें से कुछ लोगों का जीवन भ्रष्टाचार से व्याप्त दिखाकर उच्च-उच्च वर्ग की सद्य स्थिति को पाठकों के सामने रखा है।

निम्न-उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले परिवार जैसे 'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास की नायिका सुवर्णा का माईका और 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास के मनोहरलाल जी, जिनका परिवार बनारस का प्रतिष्ठित परिवार है। रिटायर्ड होने के बाद उनकी जीवन शैली उच्चवर्गीय जैसी दिखाई देती है। रम्मो की छोटी बहू का परिवार निम्न-उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। बहू के पिता रिटायर्ड जज हैं और वे अपने जमाने के रायबहादूर हैं। छोटू के कॉलेज के मित्र भी निम्न उच्चवर्गीय हैं।

इस तरह यहाँ उच्चवर्ग के प्रतिनिधित्व करनेवाले कुछ पात्र और परिवार दिखाई देते हैं।

3.2 मध्यवर्गीय समाज :-

मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में उच्चवर्ग के साथ-साथ मध्यवर्ग के चित्र भी प्रस्तुत किये हैं।

'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास में सुवर्णा का परिवार, उच्चमध्य वर्ग के परिवार का प्रतिनिधित्व करता हैं। सुवर्णा और पति रमेश भारतीय प्रशासन में उच्चपद पर नियुक्त हैं। उनके परिवार पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।

'लाल पीली जमीन' के बोस साहब भी उच्च मध्य वर्ग का नेतृत्त्व करते हैं। वे एक सफल वकिल और राजनेता हैं। लेखक उनके घर के बारे में लिखते हैं - "बोस साहब की कोठी पूरे शहर में आश्चर्य की कोठी पार्टियों में जाना, शहर में दो-दो फ्लैट, उनके बच्चों का अर्थ को महत्त्व देना आदि उच्चमध्यवर्ग की महत्त्वपूर्ण बातें हैं जैसे राजन अपनी बेटी बिट्टो से पढ़ाई में ध्यान देने की बात करता तब वह कहती है - "सीख रही हूँ मनी

मैटर्स के बारे में दैट्स नौट लैस इम्पोर्टन्ट दैन बुक नॉलेज ...... आज वह सबसे बड़ी ताकद है इट्स द थिंग ।"[2] बिट्टो का छोटा भाई छोटू भी उच्चवर्गीय मित्रों का अनुकरण कर मस्ती करने के लिए माता-पिता से हमेशा पैसे ऐंटता हैं और हॉटेलिंग, पार्टियाँ, शराब, सिगारेट आदि का शौकीन बनता है। उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा आज उच्चमध्यवर्ग की पीढ़ी पाश्चात्य अनुकरणीय तथा उच्चवर्गीय प्रभाव से ग्रस्त हैं और जीवन में अर्थ को ज्यादा महत्त्व देती हैं।

मिश्र जी ने समाज के मध्य-मध्य वर्ग का भी चित्रण किया हैं। वह अपना चेहरा का नायक मि.शुक्ला तथा लाल पीली जमीन के चौबे जी, जादव जी, तुम्हारी रोशनी में उपन्यास के अन्य पात्र जैसे अनंत, श्याम मोहन और पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास के मोहन का परिवार आदि मध्य-मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

मिश्र जी निम्न मध्य वर्ग से संबंधित हैं क्योंकि उनके माता-पिता प्राथमिक स्कूल में शिक्षक होने के कारण उनका तबादला विभिन्न जगह पर होने से, वहाँ के भिन्न वर्गों के लोगों से मिश्र जी का संपर्क रहा है। इसी कारण मिश्र जी के उपन्यासों में निम्न उच्चवर्ग का यथार्थ वर्णन हुआ है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में केशव का परिवार मास्टर कंठी, मास्टर कौशल आदि लोग निम्न मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास का छोटे भी निम्न मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करता है। जिसके सामने मकान की समस्या खड़ी है, वह राजन के हिस्से का मकान अपने उपयोग में लाता है। जिसके कारण उस पर मुकदमा चलता है। इस वर्ग के परिवार ज्यादातर एकल परिवार पद्धति के है - जैसे केशव का परिवार। पाँच आँगनोवाला घर का छोटे, श्याम का परिवार इस तरह निम्न मध्य वर्ग को मकान की समस्या, एकल परिवार जैसी अनेक छोटी-मोटी समस्याओं का सामना करता पड़ता हैं।

3.3 निम्नवर्गीय समाज :-

प्रेमचंद से लेकर वर्तमान साहित्यिकों से निम्न वर्ग का यथार्थ चित्रण कर पाठकों के मन में इस वर्ग के प्रति कुछ सहानुभूति निर्माण करने का प्रयत्न किया है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों के द्वारा निम्नवर्गीय समाज की यथार्थ स्थिति सामने रखी है।

निम्नवर्गीय दयनीय स्थिति का लेखक ने वर्णन किया है। लाल पीली जमीन उपन्यास में दिखाए गए मुहल्ले के ज्यादातर लोग उच्च निम्नवर्गीय है। जो अपने काम में हमेशा मशगुल रहते हैं। इसी कारण उनको अपने बच्चों की तरफ ध्यान देने में दिलचस्पी नहीं है। यहाँ बच्चे यूँ ही गलियों में बिना साधन के खेल खेलते हैं। इनके घर गोबर से लिपे हुए हैं। कुछ घरों में गाय, बकरियाँ, भैंसे हैं जिससे घर का गुजारा चलता है। इस बस्ती के बारे में लेखक लिखते हैं - "बस्ती मिले-जुले लोगों की थी। ज्यादातर खेतीहार थे पर अपने छोटे-छोटे धंदो से पेट भरनेवाले भी कम न थे। सुनार, लुहार, बढ़ई, मोची, वैद्य कुछ सरकारी और गैर सहकारी मुलाजीम भी

थे। जैसे पोस्टमन।"[3]

इसी बस्ती के नारायण और कल्लू दोनों भी इस वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। नारायण को झल्लू पंड़ित ने अपने चेले के रूप में मंदिर में पूजा करने के लिए रखा है। तो कल्लू चौबे के आखाड़े में काम करता है। इसी तरह उन दोनों का खाने-पीने, रहने का बंदोबस्त होता है, मगर इनकी ये नौकरियाँ चली जाए तो दोनों को भूखें रहने के सिवा दूसरा मार्ग नहीं है। इस वजह से दोनों अपने प्रेम में असफल दिखाई देते हैं।

मिश्र जी ने निम्न निम्नवर्ग का चित्रण करके उनके प्रति पाठकों के मन में सहानुभूति जगाने का प्रयत्न किया हैं। लाल पीली जमीन उपन्यास में केशव को एक आदमी भूत सा लगता है, जो असल में निम्न निम्न वर्ग का है।

मिश्र जी लिखते हैं - "मैली कमीज की फटी हुई बाँह एक हाथ पर लटक रही थी, सामने भी एक धज्जी झूल रही थी चितक बरे रंग की। काले रंग की सड़ी सी जाकेट पायजमा पिंड़रियों तक सकारा गया और .... दाढी बढ़ी।"[4] इस तरह उस आदमी का लिबास उसकी स्थिति से वह निम्न निम्न वर्ग के दयनीय लोगों का प्रतिनिधित्त्व करता है।

पाँच ऑगनोवाला घर उपन्यास में राजन के घर में घुसा चोर भी इस वर्ग का है, जब चोर पकड़ में आता है तो वह कहता है, "तीन दिनों से खाने को कुछ नहीं।"[5] चोर के द्‌वारा निम्न निम्न वर्ग की गरीबी, भुखमरी जैसी समस्या उजागर हुई है।

मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्‌वारा समाज के निम्नवर्ग को सामने रखकर उनकी जीवनशैली तथा समस्याओं को स्पष्ट किया है।

उपर्युक्त प्रकार से समाज के तीनों वर्गों का गोविंद मिश्र के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है।

3.4 अज्ञानी एवं परंपराप्रिय समाज :-

समाज में पहले शिक्षा का महत्त्व कम ही था, लेकिन आज कुछ हद तक लोग शिक्षित हुए हैं। कुछ लोग शिक्षा को महत्त्व न देकर अज्ञानी रहे हैं। परिणामत: अंधश्रद्‌धा का पालन हुआ। जिससे समाज का विकास नहीं हुआ। गाँवों तथा कस्बों में बुजुर्ग लोग ज्यादातर अज्ञानी परंपराप्रिय दिखाई देते हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्‌वारा अज्ञानी एवं परंपराप्रिय समाज का वर्णन किया हैं।

'लाल पीली जमीन' उपन्यास में मिश्र जी ने कस्बाई क्षेत्र के मुहल्ले का वर्णन किया है। इस में ज्यादातर निम्न मध्य वर्ग तथा निम्नवर्ग के लोग रहते हैं। यहाँ अज्ञानता के कारण भूत-प्रेत, देवी-देवताओं की पूजा, बली देने की प्रथा का वर्णन किया है। इसके आलावा धार्मिक बाह्याड़ंबर समाज में दिखाई देते हैं। केशव बचपन से ही भूतों से डरता था, वह मानता है कि भूत की चाल तेज होती है। इसी वजह से बस्ती के अन्य बच्चे

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

समझतें है कि भूत दोपहरी में गलियों में घूमता है। बच्चों की माताएँ भी इसी कारण से उन्हें दोपहरी में खेलने को नहीं भेजती। इसी मुहल्ले में दीवान की हवेली में उसके बेटे ने असफल प्रेम के कारण आत्महत्या की थी। उसकी प्रेमिका 'छबिली' का दीवान ने खून किया था। परिणामत: दीवान ने वह हवेली दान की थी जो अब धर्मशाला है। यहाँ उपन्यास में चित्रित लोग कहते हैं - "दीवान का लड़का भूत बनकर छबीली के साथ अब भी रासलीला करता है।"[6] इस तरह उस मुहल्ले नुमा बस्ती में छोटों से लेकर बड़ों तक अज्ञानता की वजह से अंधश्रद्धा छाई हुई हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में भी कुछ पात्र ऐसे हैं जो अज्ञानी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं - जैसे जोगेश्वरी देवी, रामाधार । रामाधार ज्यादातर बांधने के मंतर जानते हैं - "धुर बांधे धुरेंधा बाँधे, बाँधे ताता थाई । लाख माने का भुसुंड़ बाँधे, देता हूँ दूहाई ... हे हनुमानजी ई पानी बँध जाए।"[7]

रामधार गाँव में आई बाढ़ का पानी रूकवाने के लिए उपर्युक्त मंतर कहता है। लेकिन पानी गाँव में आता ही है और बाँध टूट जाता है। मंतर का कोई उपयोग नहीं होता। यहाँ अज्ञानी लोग अंधविश्वास के कारण प्रकृति से टकराने की कोशिश करते हैं। लेकिन सफल नहीं होते। राजन के घरवाले राजन की पत्नी को भाग्यशाली कहते हैं क्योंकि, उनकी शादी के बाद राजन सिव्हिल सर्व्हिस की परीक्षा में पास होकर उच्च नौकरी पाता है। किंतु इन्हीं अज्ञान भरी बातों से राजन तथा भैया मोहन, भाभी की मेहनत पर पानी फेर दिया जाता है। लेखक खुद गाँव, कस्बा, शहर में रहे है, जिससे वे उपर्युक्त स्थिति के बारे में सूक्ष्मता से जानते हैं।

कोई भी समाज अपनी रूढ़िपरंपरा, धर्म को नहीं भूलता। मिश्र जी ने भी अपने उपन्यासों द्वारा इन परंपराप्रिय लोगों को चित्रित किया है। जैसे लाल पीली जमीन उपन्यास में खांदिया मुहल्ले के लोग हर साल रामलीला, कृष्णाष्टमी बड़े उत्साह से मनाते हैं। मंदिर में रोज आरती के लिए बच्चें, औरतें, आदमी इकट्ठा होकर भजन-पूजन करते रहते हैं। इस तरह लोग परंपरा को आगे बढ़ाते हुए दिखाई देते हैं।

पाँच आँगनोंवाला घर उपन्यास में भी ज्यादातर, बुजुर्ग लोग परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। जैसे जोगेश्वरी देवी का पूजा पाठ करना, पंचगंगा घाट पर कार्तिक स्नान के लिए जाना। घर में बरगद के पेड़ की पूजा करना, उन्हीं का हर काम में आशीर्वाद लेना। संक्रांति का उत्सव मनाना। इस तरह परंपराप्रिय लोग परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए हमेशा आगे रहते हैं। समाज में आज अच्छी परंपरा का भी पालन किया जाता है। लेकिन अंधश्रद्धा अज्ञानता के कारण भी बुरी प्रथा परंपराएँ खत्म नहीं हो रही है।

इस तरह मिश्र जी ने अज्ञान तथा परंपरा प्रिय समाज को अपने उपन्यासों के कुछ प्रतिनिधि पात्रों द्वारा प्रस्तुत किया, जो समाज में पग-पग पर दिखाई देते हैं।

13653

3.5 जातीयता :-

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था प्राचीन काल से स्थित है। समाज परिवर्तन के साथ ही जातीयता भी सामने आयी है। जिससे जाति-पाति में संघर्ष हुआ। आधुनिक समाज में कम अधिक मात्रा में जातीयता दिखाई देती है। आज के सजग, जागरूक रचनाकार जातीयता का वर्णन अपनी रचना में करते रहते हैं। मिश्र जी एक सजग लेखक होने के कारण उनके उपन्यासों में जातीयता का वर्णन दिखाई देता है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में केशव के माध्यम से जातीयता स्पष्ट दिखाई देती है। एक दिन केशव घर में अकेला रहने से डरा हुआ है। उस समय घर आए मुँहबोले मामा के गले वह लिपटना चाहता है, लेकिन वैसा नहीं करता। वह कहता है - "वे सगे मामा नहीं थे दूसरी जाति के थे।"[8] इस तरह छोटे बच्चों के मन में भी जातीयता का भाव दिखाई देता है। इसी बस्ती का पुलिस शिवहरें जो नीची जातवाला है। जब वह पंचायत में जाता है तब ऊँची जात के जादव जी बोस साहब से कहते है - "वह शिवहरे का बच्चा बिन बुलाए चला आया था और ऊंच जाति को देखा की एकदम भड़क उठता है।"[9]

समाज में मेहनती व्यक्ति के परिवार पर जब मुसिबतें आती हैं तब वह केशव के पिता की तरह ही सोचेंगे - "काम आखिर अपनी ही जाति के आते है चौबों की तरफ मकान लेते तो शायद यह दुदर्शा न होती।"[10]

साथ ही पाँच आँगनोंवाला घर उपन्यास में भी जातीयता दिखाई देती है। जोगेश्वरी देवी अपने बेटे से कहती है - "पता नहीं कहाँ से इ दूनो कयथन (कायस्थों) के खानदान में आ गए - एक त सन्नियां सारंगी बजावे और इ रजवा पगलन के तर बइठे - बइठे समझै न बूझ कठउती लेके जूझे।"[11] यहाँ जोगेश्वरी देवी सारंगी बजाना, गाना गाना ये छोटी जाति के काम समझती है। इसीलिए सन्नी का गाना बजाना उसे पसंद नहीं है, जो जातीयता स्पष्ट करता है।

इस तरह जातीयता प्राचीन काल से आधुनिक काल में भी स्थित हैं। इसी जातीयता का फायदा आज कुछ राजनीतिक लोग जातीय गुट बनाकर उठा रहे हैं।

3.6 अन्याय / अत्याचार :-

समाज का बहुत सा हिस्सा अन्याय / अत्याचार में लिप्त रहा है। आर्थिक स्थिति से कमजोर तथा मानसिक रूप से जर्जर लोगों पर सशक्त लोग अन्याय करके अपना जीवन सुखमय बनाते हैं। प्राचीन काल से ही जमींदार वर्ग, राजनेता, शिक्षित लोग, अशिक्षित, गरीब लोगों का फायदा उठाकर उनका शारीरिक, मानसिक शोषण करते आए हैं। इस तरह समाज में अन्याय/अत्याचार का क्रम जारी है। अंधविश्वास, अज्ञान के कारण शोषित वर्ग अन्याय प्रतिकार का सपना भी नहीं देखते। संवेदनशील उपन्यासकार अपने आसपास के परिवेश में स्थित अन्याय/अत्याचार का यथार्थ वर्णन अपने साहित्य में किए बगैर नहीं रह सकता।

संवेदनशील रचनाकार मिश्र जी के लाल पीली जमीन उपन्यास में अन्याय / अत्याचार के कई

चित्र सामने आये हैं। पुलिस शिवहरे का भरी पंचायत में काठी से बेगुनाह केशव के पिता को पीटना और बीच में केशव के पिता अपना बचाव न करे इस उद्देश्य से ढोंगी झल्लू पंडित का उन्हें जखड़कर रखना अन्याय ही है। छात्र शिवमंगल का हाकी की स्टीक लेकर मास्टर कौशल को मारने के लिए जाना और झल्लू पंडित का अपनी पत्नी को खून निक लने तक खुले आम पीटना अन्याय / अत्याचार के ही द्योतक है। उसी अन्याय/अत्याचारको सहने से अन्याय करनेवाले फिर दुगूणी मात्रा में अन्याय करने का प्रयत्न करते हैं।

कैलाश पर पुलिस शिवहरे शैलजा को भगाकर ले जाने का झूठा इल्जाम लगाकर जेल में बंद करता है। उसे बहुत पीटता है। लेखक उसका इस प्रकार चित्रण करते हैं - "शिवहरे ने जैसे पकड़ सुबह-श्याम पीटा जब थक गया तो औरों से पिटवाया बांधकर सबसे बारी-बारी पिटवाया।"[12] परिणामत: जेल से छूटकर कैलाश चीढ़कर बदले की आग में शिवहरें का वहीं हाल करता है जो शिवहरे ने कैलाश का किया था। इस अन्याय/अत्याचार की परंपरा समाज में चलती जा रही है। इसी इलाके में डाकू कलक्टर की लड़की को भगाकर उस पर बलात्कार करते हैं और उसे घर भेजते हैं। तब सरकार कलक्टर और डाकूओं का वैयक्तिक मामला कहकर उस केस को दबा देती है। यहाँ पुलिस पर भी होते अन्याय/अत्याचार का चित्रण मिश्र जी ने यथार्थ रूप में किया है। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर लिखते हैं - "जंगली जीवन के पाशवी स्तर पर चलनेवाली इस आतंककारी दुनिया को गोविंद मिश्र ने अपने पूरी क्षमता के साथ उकेरा है।" [13]

इस तरह मिश्र जी पाशवी अन्याय की वृत्ति को हमारे सामने रखते हैं। उपन्यास की अन्य पात्र शैलजा, मालती, शांती अन्याय / अत्याचार से प्रताड़ित है। शांति तो आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त कर अन्याय से छूटकारा पाती है। इस तरह अन्याय समाज में नारी को उभरने नहीं देता।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में लेखक ने स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन किया है। इसमें अंग्रेजों ने भारतीयों पर किए अन्याय / अत्याचार का यथार्थ चित्रण मिश्र जी ने किया है। राजन स्कूल में देशभक्ति पर रची कविता सुनाता है। तभी स्कूल के हेड़मास्टर स्मीथ राजन को बहुत मारते हैं। इस तरह निष्पाप बच्चे की पीटाई यहाँ दिखाई देती है। स्वतंत्रता आंदोलन में जुलूस, सभाओं पर तथा बनारस हिंदू युनिव र्सिटी के छात्रांदोलन में अंग्रेजों ने क्रांतिकारी छात्रों पर गोलियाँ चलाकर अनेक छात्रों को मौत के घाट उतारा था। तथा भारत पाकिस्तान बँटवारे के समय कई लोग मारे गए। अत: स्वतंत्रता आंदोलन के दरम्यान अंग्रेजों ने भयावह मात्रा में भारतीय लोगों पर अन्याय /अत्याचार किए हैं। इसका यथार्थ वर्णन मिश्र जी ने किया है। भारत में सन 1990 ई. में भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने नौकरी में अनुसूचित आरक्षण रखा और देश के छात्र आत्मदाह करने पर मजबूर हुए। इस तरह राजनेता अपनी सरकार बचाने तथा भ्रष्ट वृत्ति के कारण अप्रत्यक्ष रूप से जनता पर अन्याय /अत्याचार करते हैं। यहीं अपने उपन्यासों द्वारा मिश्र जी ने दिखाया है जो आज एक सामाजिक सत्य है।

3.7 शिक्षा व्यवस्था :-

शिक्षा व्यवस्था समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षा के कारण मनुष्य परिपूर्ण बनता है। भारतीय शिक्षा पहले पुरूषों तक ही सीमित थी। लेकिन बदलते समय के नुसार स्त्री शिक्षा का प्रसार हुआ और नारी शिक्षित होकर उच्चपद पर जाने योग्य बनी। इस तरह शिक्षा व्यवस्था के बदलते स्वरूप में आज अंग्रेजी माध्यम को शिक्षा में अधिक महत्त्व दिया जाता है। तथा कॉम्पीटेटिव्ह परीक्षा को आज की पीढ़ी महत्त्वपूर्ण मानती है। जो सुधारित शिक्षा व्यवस्था की देन है। शिक्षा में शारीरिक विकास के लिए खेलों को अनिवार्य विषय बनाया है। आज इस में छात्रांदोलन,शिक्षा में कम उत्साह आदि समस्याएँ दिखाई देती है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा आज की शिक्षा व्यवस्था को प्रस्तुत किया हैं।

तुम्हारी रोशनी में इस उपन्यास में लेखक ने अनंत के द्वारा अंग्रेजी माध्यम पर प्रहार किया है, जैसे वह कुछ कॅान्वेट लड़कियों की बातचीत से उनकी लचक भाषा, बर्ताव को देखकर कहता है -

"यह शिक्षा हमें किस कदर एक-से साँचे में ढालती जाती है, बच्चों की वैयक्तिकता को उभारने की बजाय कैसे दबाती है।"[14] इस तरह अंग्रेजी माध्यम से वैयक्तिकता बढ़ती है, जो शिक्षा व्यवस्था में अनोखी बात है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में श्याम अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में भेजता है तथा उन पर अंग्रेजी बोलने के लिए हर वक्त जबरदस्ती करता है। इस तरह आज अंग्रेजी माध्यम का शिक्षा व्यवस्था में बोलबाला है।

आज शिक्षा व्यवस्था में कॉम्पीटेटिव्ह परीक्षा को हर महत्त्वाकांक्षी युवक-युवती महत्त्व देते हैं। वह अपना चेहरा की रेश्मा कम्पीटीशन की जोरों से तैयारी करती है, उपन्यास का नायक मि.शुक्ला उसे गाईड करता है। आज शिक्षा व्यवस्था में पी.टी. और अन्य खेलों को बढ़ावा दिया जाता है। लाल पीली जमीन के केशव, शिवमंगल और अनेक छात्र स्कूल में हाकी तथा अन्य खेलों का अभ्यास करते दिखाई देते हैं। पूरे शैक्षिक वर्ष को दो सत्र में बाँटने की व्यवस्था शिक्षा क्षेत्र में है। दोनों सत्र का अभ्यास कुछ लड़के जोश के साथ करते हैं - जैसे केशव, बड़े, कैलाश। इन लड़कों को मास्टर कंठी, मा.कौशल मदद करते हैं। मास्टर कंठी स्कूल का प्रिंसिपल बनने के बाद वहाँ की स्कूली शिक्षा के व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करते हैं। ये अध्यापक मेधावी ओर गरीब लड़कों को युनिवर्सिटी स्तर की शिक्षा पाए इस उद्देश्य से उन्हें आर्थिक मदद भी करते हैं। इस तरह शिक्षा व्यवस्था में आदर्श अध्यापक शिक्षा की आत्मा होता है। जिसके बल पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आता है।

शिक्षा व्यवस्था में परीक्षा की कुछ लड़के जोरों की तैयारी कर पास होते हैं। लेकिन कुछ लड़के करके पास होते हैं। जैसे लाल पीली जमीन का शिवमंगल। लेखक लिखते हैं- "शिवमंगल की कापी के नीचे एक पर्चा था.... जिसे वह कापी की बराबरी में रखकर इत्मीनान से देखता जाता था और धीरे-धीरे उतारता जाता था।"[15] इस तरह शिवमंगल को कापी करते वक्त रोकते हुए मास्टर कंठी शिवमंगल के चाकू का शिकार

बनते हैं। आज समाज में परीक्षा में नकल को रोकना असंभव हो रहा है।

आज शिक्षा व्यवस्था में राजनीतिक लोग प्रवेश कर चुके हैं जैसे लाल पीली जमीन में स्कूल के प्रेसिडेंट राजनेता बोस साहब स्कूल के प्रिंसिपल पद पर अपना आदमी बिठाना चाहते हैं ताकि वे स्कूल को अपनी मुठ्ठी में रख सके हैं। जिससे उन्हें भ्रष्टाचार करने में आसानी हो। लेकिन छात्रांदोलन की वजह से योग्यता के पात्र मास्टर कंठी ही आखिर में प्रिंसिपल बनते हैं। इस तरह छात्र अपनी माँगों के लिए छात्रांदोलन करते हैं, जिससे समाज में तनाव निर्माण होता है। इसी छात्र शक्ति का नेतागण, कमी कमी अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करके छात्रों को गलत दिशा बताकर उनका नुकसान करते हैं। अत: शिक्षा व्यवस्था आज भ्रष्टाचार, आतंक का पर्याय बनी है। आज पढ़ाई में कुछ युवक उत्साह नहीं दिखाते। शिक्षा में अनुत्साह दिखाते हैं, जिससे शिक्षा का महत्त्व कम हो रहा है। लाल पीली जमीन के कल्लू, सुरेश जैसे नवयुवक शिक्षा को अधूरा छोड़कर गुंड़े बने हैं। सुरेश मास्टर से कहता है - "तुम जानते हो पढ़ने - पढ़ाने का झमेला अपने बस का नहीं, कोर्स का एक पेज पढ़ते ही नींद आ जाती है। इसलिए रेंग-रेंग कर आठवीं में आ पाया।"[16]ठीक इसी तरह पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास का पात्र सन्नी भी पढ़ाई से ऊब जाता है और पढ़ाई करना छोड़ता है। आज की नवयुवतियों का प्रतिनिधित्त्व बिट्टो करती है, जिसके शिक्षा के बारे में कुछ अलग ही विचार है वह कहती है -

"इस उम्र को सिर्फ किताबों में गँवा देना कहाँ की अक्लमंदी है। जिंदगी में और भी चीजें है, पढ़ाई के आलावा।"[17] इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था की यह सबसे बड़ी असफलता है, जो आज शिक्षा का महत्त्व कम कर रही है।

आज शिक्षा व्यवस्था में देश की प्रगति आवश्य है। लेकिन नकल, छात्रांदोलन, शिक्षा में अनुत्साह दिखाने वाले कुछ व्यक्ति शिक्षा का महत्त्व कम रहे हैं।

3.8 निम्नवर्ग का शोषण :-

निम्न वर्ग तो हमेशा शोषित के रूप में ही पहचाना जाता है। अर्थाभाव से गरीबी, भुखमरी, मकान की समस्या से त्रस्त यह वर्ग उच्च तथा मध्य वर्ग की सेवा में अपना जीवन व्यतित करता है। हिंदी साहित्यकारों ने निम्नवर्ग का यथार्थ वर्णन कर उनका अन्य वर्गों के द्वारा हुआ शोषण तथा समस्याओं को प्रस्तुत किया हैं। गोविंद मिश्र के उपन्यासों में भी निम्नवर्ग के शोषण का वर्णन हुआ है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में रियासत के दीवान नाचनेवाली छबीली तथा उसकी दो-एक साथियों को गोली से मरवा देता है। क्योंकि दीवान का इकलौता लड़का गरीब छबीली के प्रेम में फँसा था। इसी तरह दीवान ने सामाजिक विषमता की वजह से निम्नवर्गीय छबीली का खून कर दिया। इस बस्ती का सुरेश भट्ट की लड़की को भगाकर ले जाता है और बलात्कार करता है। दूसरे दिन भट्ट की दुकान पर चाय पीने जाता है और कहता है - "कसम से, तेरी लौड़िया बड़ी कसक चीज थी.... तू फिकर मत कर, आगे कोई खतरा नहीं। सुरेश

सिर्फ एक बार ही चखता है। लेकिन तुझे एक बार ही और तंग करूंगा - जब छोटी तैयार हो जाएगी बस।"[18]

यहाँ गुंड़े सुरेश के सामने भट्ट कुछ न कह सका सिर्फ दाँत पीसता रह जाता है। इस तरह सुरेश कपड़े की दुकान, तथा चाय की अन्य दुकान पर ऐसे ही रोब झाड़कर उन लोगों का शोषण करता है। सुरेश गरीब मेहनती नारायण को भी मारपीट करके पूरे मुहल्ले में उसे बेइज्जत करता है। समाज में दीवान तथा सुरेश जैसे लोग निम्नवर्गीय लोगों को शोषण करना अपना अधिकार समझतें हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास के घर में घुसा लड़का भुखा और गरीब है। रोटी लाने के उद्देश्य से वह घर में जाता है, लेकिन सब उसे चोर समझते हैं। जब रामाधार, उसे घर में घुसने का कारण पूछता है, "तब लड़के ने दीनता-भरी आँखे उपर कीं। रामाधार ने एक लात लगाई कि लड़का उच्च से रह गया।"[19]

इस तरह उस लड़के का गरीबी के कारण रोटी चोर बनना, रामाधार का उसे घूँसा मारना एक तरह से शोषण ही है।

3.9 आर्थिक विपन्नता :-

आर्थिक विपन्नता का सामना मध्य तथा निम्न वर्ग को करना पड़ता हैं। समाज का मध्यवर्ग आर्थिक विपन्नता से ज्यादातर त्रस्त दिखाई देता हैं क्योंकि इस वर्ग में दिखावटीपन अधिक मात्रा में होता हैं। निम्न वर्ग तो पहले से आर्थिक विपन्नता में ही जीता हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक विपन्नता का वर्णन किया हैं।

'वह अपना चेहरा' उपन्यास में शहरी मध्यवर्गीय लोगों का वर्णन हुआ हैं। मध्यवर्ग रोजमर्रा की जिंदगी में पैसे बचाकर ही अपना जीवन बीताता है। जैसे उपन्यास का नायक मि.शुक्ला का बस में जाने के बजाय मित्र अमरू की कार मे जाना। इस तरह नौकरी पेशा लोग जो मध्यवर्गीय हैं, वे पैसे बचाकर आर्थिक विपन्नता दूर करने का प्रयत्न करते हैं। लाल पीली जमीन में खांदिया मुहल्ले के ज्यादातर लोग विपन्नता में जीवन बीता रहे हैं। अत: इस बस्ती के बच्चे बिना साधन सामग्री के खेल खेलते हैं। माँ-बाप दिन-भर काम करते हैं, उन्हें अपने बच्चों की तरफ ध्यान देने के लिए समय नहीं। इस तरह माँ-बाप आर्थिक विपन्नता के कारण बच्चों के विकास की तरफ ध्यान नहीं देते और बच्चों की छोटी उम्र फालतु समझते हैं। मालती की शादी आर्थिक विपन्नता के कारण अधेड़ विधूर सर्वेश से कर दी जाती है। जब मालती की माँ इस शादी का विरोध करती है तब दद्दा कहते हैं -

"हाँ, तेरा घर तो जैसे इंद्र का दरबार है। चोट्टी जब से आई, घर ढ़हा दिया। खेती-बाड़ी लित - पुत गई। अपुन को न देखेगी, त्रिया-चरित्र दिखाएगी। ऐसा कमाऊ लड़का कहाँ धरा है फिर।"[20]

इस आर्थिक विपन्नता से नारी की स्थिती दयनीय बनी है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में

मोहन भैया के परिवार को आर्थिक विपन्नता दो भाईयों के पढ़ाई के खातिर सहनी पड़ती है। मोहन भैया अपना ख्याल न कर हमेशा दो भाईयों की सुख-सुविधा का ध्यान रखता हैं, जैसे - "जब राजन इलाहाबाद में पढ़ता था तो भैया अपने लिए जूते का जोड़ा इसलिए नहीं खरीदते थे कि राजन के लिए जो रूपये भेजे जाने हैं उनमें कमी न पड़ जाए।"[21]

बाँके भैया को संयुक्त परिवार के विघटन के कारण आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड़ता है। लेखक लिखते हैं -

"जब से अलग हुए थे बाँके, उनके परिवार का खाना-पीना गिरता ही चला गया। बाँके भैया की कमाई ही कितनी थी .... कचहरी की मुहर्रिरी में क्या होता है।"[22]

इस तरह आर्थिक विपन्नता में आज का आदमी स्वार्थी बनता है और अर्थ के पीछे भागता ही रहता है। मिश्र जी ने उपन्यासों में आर्थिक विपन्नता का चित्रण कर भारतीय मध्य तथा निम्नवर्ग की जीवनशैली को प्रस्तुत किया हैं।

3.10 **स्वतंत्रता आंदोलन :-**

हिंदी उपन्यासकारों ने बहुत मात्रा में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का वर्णन अपने उपन्यासों में किया हैं। इस तरह स्वतंत्रता का प्रत्यक्ष चित्रण समाज के सामने देश की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत करता है। मिश्र जी के पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में सन 1940 ई. से आगे के स्वतंत्रता आंदोलन का वर्णन हुआ है।

सन 1940 ई.को प्रांतीय स्टूडैट्स फेड़रेशन सम्मेलन में गांधीजी के नेतृत्त्व में काँग्रेस ने आज़ादी की लड़ाई लड़ी। यह प्रस्ताव-स्वीकृत होने से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गया। 1 अगस्त 1942 ई. में संपूर्णनंद युनिवर्सिटी की काँग्रेस शाखा के कार्यकर्ता, तथा छात्रों ने संघर्ष की योजना बनाई तथा 9 अगस्त, 1942 को गांधीजी ने भारत छोड़ो का नारा लगाकर स्वतंत्रता संघर्ष को बढ़ावा दिया। परिणामतः मुंबई में अंग्रेजों ने कुछ नेताओं को गिरफ्तार किया तो कुछ नेता अंडरग्राऊंड हो गए। बनारस युनिवर्सिटी के छात्रों ने जुलूस निकाला तथा देश के अपने-अपने प्रदेशों में स्वतंत्रता संघर्ष की लौ जलने लगी। छात्रों ने बनारस कचहरी पर तथा और भी कई पुलिस थानों पर तिरंगा लहराया तथा बनारस कचहरी, मडु आडीह, गंगापुर की रजिस्ट्री कचहरी, और कपसेठी स्टेशन जलाएँ। राजा तालाब के गोदाम को अपने कस्बे में लेकर किसानों को अनाज बाँट दिया। परिणामतः अंग्रेजों ने छात्रों पर गोलियाँ चलाई जिससे अनेक छात्र घायल और शहीद हुए। भारत छोड़ो, करो या मरो के नारों के साथ जुलूस प्रभात फेरियाँ तथा गिरफ्तारियाँ आम दिनचर्या बन गई। जिससे प्रेरित होकर राधेलाल क्रांतिकारी बने और अंडर ग्राऊंड हुए। अतः पूरे दो साल चोरी छुपे लोगों के घर देशी अखबार पहुँचाने का काम करते रहे। लेकिन कुछ दिनों बाद वे पकड़े गए और बीमार पड़े। इसी बिमारी में उनका अंत हो जाता है। आखिर 15 अगस्त 1947 ई. में भारत को आजादी मिलने से सारे देश में आजादी के जश्न मनाएँ गए।

इस तरह यहाँ सन 1940 ई. से स्वतंत्रता मिलने तक के आजादी संघर्ष का वर्णन है। डॉ.रामजी तिवारी लिखते हैं - "इसी खण्ड में स्वतंत्रता संग्राम के समय का जनजीवन .... अंग्रेजों की दमन नीति, भारतीय नेताओं का संकल्प छात्र संगठनों का गठन स्वतंत्रता आंदोलन की कार्यप्रणाली का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।"[23]

यहाँ भारतीय देशप्रेमी समाज को हम देख सकते हैं, जो स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बली चढ़ाता है। डॉ.प्रेमशंकर अपने लेख पाँच आँगनोवाला घर में लिखते हैं - "पाँच आँगनोवाला घर गोविंद मिश्र का नवीनतम उपन्यास है एक लम्बे कालखंड़ में फैली हुई कथा स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों से आरंभ होती है और सन 1990 ई. में मोहभंग तक आती है।"[24]

इस तरह गोविंद मिश्र जी ने स्वतंत्रता आंदोलन का यथार्थ वर्णन कर देशप्रेमी लोगों का आदर्श हमारे सामने रखा हैं।

3.11 भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी :-

मनुष्य की स्वार्थी मनोवृत्ति ही भ्रष्टाचार का मूल है। भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी समाज में निम्नवर्ग से लेकर उच्चवर्ग तक कई रूपों में होता हुआ दिखाई देता हैं। यह समाज को दीमग की तरह कुरेद कर सामाजिक व्यवस्था को खोखला बना रहा है। इसी वजह से आधुनिक हिंदी साहित्यकारों ने नैतिकता, मानवी मूल्य को खत्म करनेवाले भ्रष्टाचार को महत्त्व दिया है। गोविंद मिश्र खुद एक इन्कम टैक्स अफ़सर होने के कारण उन्होंने समाज में चल रहे भ्रष्टाचार को देखा है और उसका यथार्थ वर्णन अपने उपन्यासों द्वारा किया है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में दूसरे इलाके में तबादला करने लिए कोतवाल को अपने सिनिअर अफ़सर को दस हजार रूपए देने पड़ते हैं। इसी तरह से वह बोस साहब को कहता है - "इस इलाके का इन्चार्ज रहना मेरे प्रमोशन में भी मदद करेगा और फिर यह थाना लाँस में कभीं नहीं गया।"[25]

इस तरह हर थाने में फायदा देखना मतलब रिश्वत लेकर अपनी जेबें भरना, यहीं कोतवाल की नीति है। मिश्र जी ने कोतवाल को भ्रष्ट, रिश्वतखोर पुलिस का प्रतिनिधि पात्र बनाकर प्रशासन में चलते भ्रष्टाचार को स्पष्ट किया हैं। बोस साहब का स्कूल को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना भ्रष्टाचार ही है।

वह अपना चेहरा उपन्यास द्वारा प्रशासन के दफ्तरी माहौल में चलता हुआ भ्रष्टाचार लेखक ने पाठक कों के सामने प्रस्तुत किया है। मि.शुक्ला अपने सिनिअर अफ़सर केशवदास का भ्रष्ट रूप देखते हुए कहते हैं -

"वह चुन-चुन कर अपने आदमी दिल्ली में लाकर बैठाएगा .... वे अगर काम नहीं करेंगे तो फिर बेकार गया, आखिरी बात यह भी दिखाई गई कि नौकरी के इन शेष वर्षों में वह जो कमाई कर सके वह भी कर ड़ालने की सोचता होगा वह हम जैसों की मार्फत कर सकेगा।"[26] इस तरह केशवदास भ्रष्ट अफ़सरों का प्रतिनिधित्त्व करता है, जो जनता से भेंट स्वरूप में वस्तुएँ लेकर उनके काम निपटता है। इसी वजह से स्पेशल पोस्ट के लिए

केशवदास को शुक्ला रूपए 5000/- देता है।

डॉ.चंद्रकांत बांदिवड़ेकर - गोविंद मिश्र एक मूल्यांकन इस लेख में लिखते हैं - "एक मासूम-सा व्यक्ति अफ़सरशाही के आत्मकेंद्रित घिनौने भ्रष्टाचारी विद्रुप में धीरे-धीरे कैसे ढ़ल जाता है इसका बड़ा प्रभावशाली चित्र गोविंद मिश्र ने दिया है।"[27] अत: इस भ्रष्ट नीति में गरीब लोग ही पीसे जाते है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में उच्चवर्गीय तथा निम्नउच्चवर्गीय समाज में चलते भ्रष्टाचार को स्पष्ट किया हैं। राजन अपनी पत्नी की हर एक माँग पूरी करने के लिए भ्रष्टाचार कर तथा रिश्वत लेकर लोगों के काम करता हैं। पत्नी रम्मो के पिता जज थे, वे भी भ्रष्ट दिखाए है। जिसके कारण रम्मो अपने पति को रिश्वत लेने के नुस्खे बताती है। राजन की भाभी राजन को इस बारे में पूछती है तब राजन कहता है - "हाँ, मैं बेईमान हूँ, घूसखोर हूँ, नीच हूँ सब अवगुण है मुझ में बस .... आप लोगों के लायक नहीं हूँ।"[28]

राजन के इस वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि भ्रष्ट आदमी को रिश्वत लेना मामूली लगता है। वह स्पष्टत: कबूल करता है कि वह भ्रष्ट है। उसे अपने गुरूजनों के नजरों में गिर जाने का दुख नहीं होता। एक बार रिश्वत लेने की आदत पड़ जाए तो मनुष्य उसीके पीछे ही दौड़ता है। ऐसे लोग समाज को खोखला कर खुद भी बर्बाद होते हैं। इस उपन्यास में देश के कुछ नेतागणों का भ्रष्ट रूप दिखाया हैं।

समाज में स्थित भ्रष्टाचार का यथार्थ रूप मिश्र जी के उपन्यासों में दिखाई देता है। जिसके कारण ही समाज में संघर्ष, आंदोलन, गुंड़ागर्दी और आर्थिक समस्याएँ दिखाई देती है।

3.12 **व्यसनाधीनता :-**

समाज में व्यसनाधीनता बढ़ती ही चली जा रही हैं। आज कस्बों, गाँवों तथा शहरों में व्यसनाधीनता दिखाई देती हैं। आज के नवयुवक तथा बुजुर्ग लोग भी व्यसन करते हैं। भंग, गाँजा, चरस, शराब आदि व्यसनों का इस्तेमाल आज समाज में हो रहा हैं। शायद आज आश्रम तथा मंदिर चरस, गाँजे, भंग के अड्डे बनते जा रहे हैं। अत: शहरों में लोग पार्टियों में शराब तथा रोज सिगारिट पीते हैं। नशीली चीजें समाज को बर्बाद कर रही हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा समाज स्थित में कस्बा, गाँव, तथा शहरी लोगों की व्यसनाधीनता का वर्णन किया है।

मिश्र जी ने कस्बाई क्षेत्र में स्थित व्यसनाधीनता का चित्रण किया है। जैसे लाल पीली जमीन का झल्लू पंड़ित जो मुहल्ले के मंदिर का पुजारी है। वह भंग, बीड़ी हमेशा पीता रहता है। वह खुद भंग बनाता है। वकिल साहब शिवराम से पंडित के बारे में पूछते हैं तब शिवमंगल कहता है - "है पास के मंदिर का पूजारी, भंग पीता है।"[29] इस पंडित की वजह से आम पुजारियों की प्रतिभा पर कलंक लगता है। मुल्तन खबास पंडित का चेला भंग, गांजा, बीड़ी आदि बनाने में और पीने में पंड़ित का साथ देता है। अन्य पात्र शिवमंगल, रमेश ये नवयुवक भी बीड़ी पीते हैं। अत: लेखक कस्बाई क्षेत्र के नवयुवकों के नशापान का वर्णन यथार्थ रूप में करते हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास के घनश्याम भंग का सेवन करते हैं और कई दिन तक घर में ही पड़े रहते हैं। उनकी पत्नी राधेलाल से शिकायत करती हैं -

"भाई हैं तो नहीं कि सिर पर चढ़ा रखो, करते रहें चाहे जो कुछ। यह क्या कि नशापत्ती किए घर में दिनों-दिन पड़े रहो फिर भी कोई कुछ नहीं कहेगा। निकम्मा बना दिया, घर चलना पड़ता तो आटा-दाल का भाव मालूम हो जाता।"[30]

यहाँ नशापान के कारण आदमी निकम्मा बनता दिखाई देता है। जिसके कारण पत्नी चिंतित होती है। नशा के कारण आदमी कुछ काम का नहीं रहता। यही सत्य यहाँ स्पष्ट होता है। उपन्यास के अन्य पात्र जैसे गोवर्धन तमाकू खाते हैं और हमेशा जेब में एक बटुआ रखते हैं जिसमें अन्य चीजें होती जिनसे वे गुटखा बनाते हैं। लेखक इनके बारे में लिखते हैं - "गोवर्धन नाना के मैले कपड़ों से तमाकू और इत्र की मिली-जुली खुशबू निकलती थी .... सोंधी - सोंधी गंध।"[31] आदमी नशीली पदार्थ का इतना सेवन करता है कि उसकी महक से सबको पता चलता है कि यह व्यसनाधीन है। सन्नी चाचा इलाहाबाद के कुंभ मेले के साधु-महात्मा के अखाड़े में देखते हैं कुछ साधु लोग गाँजा चढ़ाकार खों-खों करते रहते हैं। मिश्र जी ने यहाँ समाज के संत महात्माओं की नशापान की वृत्ति को प्रकाशित किया है, जो एक धार्मिक समस्या हैं।

शहर में लोग सिगारेट, शराब पीना मामुली बात मानते हैं। हर बड़ा-छोटा अफ़सर का सिगारेट लिए बगैर कोई काम आगे नहीं बढ़ता। वह अपना चेहरा उपन्यास में सिनिअर अफ़सर केशवदास के हाथों में हमेशा सिगारेट रहती है। नायक शुक्ला की जब केशवदास के घर पर पहली मुलाकात होती है, तब उसके हाथों में सिगारेट होती है। वह रचना के घर कोई रिपोर्ट तैयार करता है। तब भी शुक्ला उसके हाथ में सिगारेट पाता है। शुक्ला और सी.डी.सिगारेट, शराब पीते रहते हैं। इस नशापान से शुक्ला अपने आपको तनाव मुक्त पाता है जैसे -

"हम बगल के क्लब में चले गए और बियर का गिलास भरकर बैठ गए। गीली घास पर धूप में बैठे-बैठे मजा आ रहा था और मैं जल्दी ही अपनी घिसघिस से बाहर निकल आया।"[32] तुम्हारी रोशनी में इस उपन्यास की नायिका सुवर्णा कभी-कभी शराब पीती है। आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण कुछ भारतीय नारियाँ शराब पीने लगी है। सुवर्णा अनंत को कहती है - "आना हैव सम ड्रिंक्स, मैं भी तुम्हारे साथ थोड़ासा लूँगी।"[33] यह बात सुनकर अनंत उसके पति रमेश के मना करने की बात कहता है। सुवर्णा बताती है कि रमेश ही उसे कभी-कभी शराब बनाकर देता है। घर में रमेश ने छोटा-सा बार बनाया है। जिसमें रम, व्हिस्की, जिन, बियर आदि शराब के प्रकार है। सुवर्णा तथा रमेश के मित्र रवि, श्याम, विनय, अनंत, अरविंद आदि शराब पीते हैं। इस तरह कुछ शिक्षित, उच्चपदस्त नारी तथा पुरूष व्यसनाधीन बने हुए दिखाई देते हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास का छोटू आज के नवजवानों का प्रतिनिधित्त्व करता है। जो कॉलेज

BARR. BALASAHEB ... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

के दिनों से उच्चवर्गीय मित्रों के संगत से शराब, सिगारेट पीना शुरू करता है।

इस तरह मिश्र जी ने व्यसनाधीनता की भीषण स्थिति का वर्णन किया है। जो आज पूरे समाज को नष्ट कर सकती हैं।

3.13 युवावर्ग :-

अधिक तर समाज युवावर्ग से व्याप्त है। इसी कारण युवावर्ग की शाक्ति को प्राचीन काल में ही नहीं बल्कि आज भी महाशक्ति के रूप में देखा जाता है। यह युवाशक्ति जब अच्छे कार्य के लिए एक होती है, तब उसे निश्चित ही सफलता मिलती है। स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद अर्थ को ज्यादा महत्त्व प्राप्त हुआ। युवावर्ग के पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से विवाह संस्था और परिवार संस्था में परिवर्तन हुए। युवा वर्ग न पूरी तरह पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर सका न ही अपने देश की संस्कृति को पूरी तरह छोड़ सका। यहीं विद्रोह सभ्य समाज के लिए उपयोगी नहीं है, जिनसे युवावर्ग की दिशाहीन भटकन शुरू हुई है। मिश्र जी ने उपन्यासों के युवावर्ग को समाज के प्रतिनिधि के रूप में सामने रखा है। पहले इस प्रगतिशील युवावर्ग को देखे :-

वह अपना चेहरा उपन्यास की रेश्मा कम्पीटीशन की परीक्षा के लिए जी तोड़ मेहनत करती दिखाई देती है। वह आम लड़कियों की तरह विवाह को ज्यादा अहमीयत नहीं देती। वह शादी करना नहीं चाहती। उस पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। लाल पीली जमीन उपन्यास के युवा केशव, कैलाश, बड़े मास्टर कंठी, मास्टर कौशल के मार्गदर्शन के कारण मेहनत से पढ़ाई करते हैं और उज्ज्वल भविष्य बनाने की कोशिश करते हैं। इस तरह आदर्श मार्गदर्शन पर कैलाश जैसा झगड़ालू लड़का प्रगति कर आगे बढ़ने की कोशिश करता है।

पाँच आँगनोवाला घर का बंटू जिस पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। वह इंजिनिअरिंग की पढ़ाई जी जान से करता है। बंटू खुद के कैरिअर को आगे बढ़ाने में सहायता मिलने के लिए ऐलिस से विवाह करता है। राजन इस युवा पीढ़ी के बारे में सोचता है -

"इस पीढ़ी का सामान्य ज्ञान बहुत है पर कल्पना शक्ति उतनी ही कम .... कि थोड़ा बताया जाए और बाकी यें समझ ले।"[34]

इस युवावर्ग में आत्मीयता कम है, राजन अपनी पीढ़ी की तुलना इस नई पीढ़ी के साथ करके मन में कहता है - "जहाँ बच्चे ज्यादा समय स्कूल-कॉलेज और दोस्तों में रहे हों तो बाहर का प्रभाव ज्यादा पड़ेगा ही, घर उस प्रभाव को कितना सही रास्ते में रख सकता है। यही बहुत है कि वे मम्मी-पापा की थोड़ी-बहुत इज्जत करते हैं ...... तो वह शायद इसलिए कि पापा खर्च चलाते हैं और मम्मी घर चलाती है।"[35] अत: नई पीढ़ी पूरी व्यावहारिक तथा आत्मकेंद्रित हैं।

मिश्र जी ने युवावर्ग के आक्रमक रूप को लाल पीली जमीन तथा पाँच आँगनोवाला घर उपन्यासों

द्वारा स्पष्ट किया है। लाल पीली जमीन के सुरेश, कल्लू, और शिवमंगल पढ़ाई में ध्यान नहीं देते हैं। वे पढ़ाई बीच में ही छोड़कर मुहल्ले का सरदार बनना चाहते हैं। इनमें से हर कोई अपनी धाक किसी कमजोर आदमी पर जमाते हैं - जैसे शिवमंगल का मास्टर कौशल के साथ झगड़ा करना आदि। वह मुहल्ले का दादा बनने के लिए कुछ प्रोग्रॅम बनाता है। सुरेश अंडरगाऊंड के लोगों से संबंध बढ़ाकर एक तमंचा हासिल कर सबको रौंदनेवाला सरदार बन मुहल्ले में आतंक मचाता है। कल्लू भी मुहल्ले के आखाड़े का सरदार बन पट्टो को अपना मोहताज बनना चाहता है। इस तरह शिवमंगल जैसे गुरु का अपमान करनेवाले युवक, बिना मेहनत करके कुछ बनना चाहते हैं। ऐसे युवाओं का फायदा तिकड़मी राजनीतिक लोग उठाते हैं। भटके हुए युवाओं को अपने फायदे के लिए बुरे काम करने के लिए उकसाते हैं। जैसे शिवमंगल के हाथों मास्टर कंठी का खून, सुरेश का छात्रांदोलन भड़काना, सामाजिक संपत्ति का नुकसान करना और कल्लू को, शैलजा को भगाने के लिए प्रोत्साहित करना आदि। भ्रष्ट शासन व्यवस्था, अवसरवादी, राजनीतिक लोगों के कारण युवावर्ग अपनी उन्नति नहीं कर पाता, बल्कि खुद अवप्रुति की खाई में गिरकर अपनी जिंदगी बर्बाद करता है - जैसे कैलाश पर झूठें इल्जाम लगाकर शिवहरे पुलिस, जेल में कैलाश को बहुत पीटता है। जिससे कैलाश क्रोधित होकर शिवहरे पुलिस को पीटकर दयनीय अवस्था बनाता है। डॉ.विवेकी राय इस उपन्यास के युवा छात्रों की दशा देखकर लिखते हैं -

"प्रिंसिपल के रिटायरमेंट के प्रश्न पर हड़ताल, जुलूस, नारेबाजी, पथराव, लाठी, गोली, अग्निकांड, सभा, नेतागिरी, सब्जबाग और चोरबाजी से लेकर युवाशक्ति की घोर अर्थहीन भटकन तक सारी बाते आ गई हैं।"[36]

इस तरह इन युवाओं की आक्रमक वृत्ति से तंग आकर तथा अपने बेटे के भविष्य से चिंतित होकर आखिर में केशव के पिता वह मुहल्ला छोड़ने का निर्णय लेते हैं।

लेखक ने पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में छोटू के माध्यम से आक्रमक युवावर्ग को स्पष्ट किया है। जैसे - राजन से छोटू का कार माँगने का तरिका तथा मम्मी से रौब झाड़कर पैसे माँगने का तरिका। विवाह विच्छेद करने के लिए तथा विवाह विच्छेद के बाद माँ-बाप के साथ अशोभनीय आचरण करना और सिगारेट पीना, सामर्थ्य से बाहर शराब पीना, उच्चवर्गीय मित्रों के साथ घूमना और बार-बार हॉटेल में जाना ये सब आज के युवक की विकृतियों का और आक्रमकवृत्ति का प्रतिनिधित्त्व करता है।

इस तरह यहाँ आधुनिक कथाकथित प्रवृत्ति के कारण आज का युवा वर्ग शराब, जुआरी, दादागिरी करनेवाला तथा समलिंगी आकर्षण से ग्रस्त, अविचारी बनता चला जा रहा है। इसी कारण वह जीवन विद्रुपता की ओर बढ़ता हुआ दिखाई देता है। जिससे वह सय्यम और विवेक, समझदारी, संतुलित दृष्टि खो देता है। मिश्र जी यहाँ कुछ प्रतिनिधि पात्रों के द्वारा वर्तमान समाज के प्रगतिशील और आक्रमक युवावर्ग को पाठकों के सामने यथार्थ रूप में रखने का प्रयत्न करते हैं।

3.14 **विदेशी प्रभाव :-**

समाज परिवर्तनशील है। प्राचीन भारतीय समाज तथा आज के आधुनिक समाज में अमुलाग्र परिवर्तन दिखाई देते हैं। अंग्रेजों के आगमन से भारतीय जन-जीवन पर विदेशी प्रभाव दिखाई देता है। विदेशी प्रभाव से व्यक्ति की विचारधारा रहन-सहन, भाषा, रीति-रिवाज, नीति, में परिवर्तन आया है। इसी का यथार्थ चित्रण मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा स्पष्ट किया है।

वह अपना चेहरा उपन्यास में रचना पर विदेशी प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। वह उच्च-शिक्षित नौकरी पेशा नारी है, जो नैतिक-अनैतिक मार्ग से पदोन्नति हासिल करती है। उसके कई पुरूषों के साथ अनैतिक संबंध हैं। वह शादी के बारे में जल्दी नहीं सोचना चाहती। इस तरह का स्वच्छंद मुक्त जीवन विदेशी प्रभाव का परिणाम है। केशवदास की बेटी रेश्मा भी शादी नहीं करना चाहती। जब वह शुक्ला से मिलती है तब अंग्रेजी भाषा के प्रभाव के कारण कहती है - हैलो हाऊ आर यू। इस तरह विदेशी प्रभाव में रेश्मा अपनी दिनचर्या बीता रही है। तुम्हारी रोशनी में उपन्यास का अनंत कुछ कॅन्वेट की लड़कियों को देखकर सुवर्णा से कहता है -

"उनके हाव-भाव एकदम एक-से, कोई किसी से मिले तो हाय बिछुड़े तो बाय सब आदमी अंकल, सब औरतें आण्टी। पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के बीच भी वहीं शब्द हाय-बाय।"[37]

इस तरह अनेक विदेशी भाषा का प्रभाव आज की युवा पीढ़ी पर दिखाई देता है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में भी श्याम अपने बेटों को अंग्रेजी स्कूल में भर्ती कराता है। राजन की तीनों संताने बोलने में अंग्रेजी का इस्तेमाल करती हैं। जब मोहन और ओमी राजन के घर जाते तब वे बच्चे हॅलो अंकल, आंटी कहते हैं। बिट्टो, का वाओ, ओ शिट, ओ रियली आदि अंग्रेजी शब्द झाड़कर उस पर पड़ा विदेशी प्रभाव स्पष्ट होता है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की नायिका सुवर्णा तथा पति रमेश पर कुछ ज्यादा ही विदेशी प्रभाव दिखाई देता है - जैसे रमेश, सुवर्णा का शराब पिना, तथा रेकॉर्ड प्लेअर पर पाश्चात्य संगीत सुनना आदि।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन के परिवार पर विदेशी प्रभाव दिखाई देता है। जैसे मोहन को ड्रिंक्स के लिए पूछना, खुद सिगारेट पीना, बेटे छोटू का भी शराब, सिगारेट पीना, रेस्त रॉंबाजी करते रहना। उनके घर में रौक म्युझिक हमेशा बजता रहता है। इस तरह आज की युवा पीढ़ी में ज्यादा मात्रा में विदेशी आकर्षण दिखाई देता है।

आज स्त्री-पुरूष संबंधों पर भी विदेशी प्रभाव दिखाई देता है - वह अपना चेहरा की रेश्मा और मि.शुक्ला के संबंध कुछ खास आत्मीय नहीं है। तुम्हारी रोशनी में की सुवर्णा के अपने मित्रों से कुछ घनिष्ठ संबंध हैं। सुवर्णा पर पुरूष के संबंध को दोस्ती के दायरे में रखती है। उसके मित्र अनंत, अरविंद, श्याममोहन भी दोस्तीनुमा संबंध रखने में कोई गलत बात नहीं मानते। जब रमेश सुवर्णा को इनसे मिलने के लिए मना करता है तब श्याममोहन सुवर्णा को कहता है -

"रमेश को यह सोचना चाहिए कि हम शिक्षित समाज के लोग है। हमारी सोसायटी में यह सब

चलता है। लोग पार्टियों में एक-दूसरे की बीवियों के साथ डान्स भी करते हैं। पति-पत्नी हर जगह सो साथ बने कहीं रहते।"38

इस तरह की विदेशी वैचारिक धारा श्याममोहन की है। वह कहता है रमेश भी उसकी पत्नी से वैसी दोस्ती पैदा कर सकता है जैसी सुवर्णा और उसके बीच है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास का छोटू भी शादी से पहले लड़का-लड़की को मिलकर एक दूसरे को समझना जरूरी समझता है। इस तरह आज विदेशी वैचारिक धारा समाज में दिखाई देती है। राजन का बड़ा बेटा बन्टू विदेशी प्रभाव के कारण विदेश में ही जाकर रहना चाहता है। आज घर की सजावट, रहन-सहन, जीवन शैली में विदेशी प्रभाव दिखाई देता है। लाल पीली जमीन के बोस साहब के घर की सजावट विदेशी है। तुम्हारी रोशनी में तथा पाँच आँगनोवाला घर की सुवर्णा और रम्मो के घर भी में विदेशी सजावट से भरे हैं। रम्मो अपने पति को रंग-बिरंगे कपड़े पहनने लिए हमेशा जबरदस्ती करती है। जिससे रम्मो पर पड़ा विदेशी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। रम्मो के पिता की जीवन पद्धति पर विदेशी प्रभाव है, जैसे टेनिस, ब्रिज खेलना और संपत्ति, स्वास्थ, समय को महत्त्व देना। आदि विदेशी प्रभाव की देन हैं।

इस तरह मनुष्य अनुकरणप्रिय होने से विदेश प्रभाव जल्दी ही ग्रहण करता है और उसमें अमूलाग्र बदल होते हैं। इस तरह समाज में परिवर्तन प्रक्रिया चलती रहती हैं।

3.15 आधुनिक साधनों का आकर्षण :-

आज विदेशी प्रभाव के कारण समाज में आधुनिक साधनों का आकर्षण बढ़ता दिखाई देता हैं। अत: बिजली की सुविधा उपलब्ध होने से कुछ आधुनिक साधन बिजली पर चलते हुए दिखाई देते हैं। इसी वजह से समाज में बिजली के साथ आधुनिक साधनों का महत्त्व बढ़ा हैं। इन साधनों के कारण समय की बचत होती है, जिससे ये साधन मनुष्य का अनिवार्य अंग बने हैं। आज जिसके पास जितने आधुनिक साधन उतना ही वह व्यक्ति प्रतिष्ठित माना जाता है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में समाज में स्थित आधुनिक साधनों का आकर्षण प्रस्तुत किया हैं।

"वह अपना चेहरा" उपन्यास में नायक शुक्ला मित्र अमरू की कार से घर जाना चाहता है, क्योंकि दिनभर की काम की थकान से बस में धक्के खाकर जाना उसे अच्छा नहीं लगता। इसलिए वह ऑफिस छुटते ही अमरू की हमेशा राह देखता है। इस तरह कार जैसा आधुनिक साधन व्यक्ति को आराम दे सकता है। इसलिए आज हर आदमी के मन में ऐसी वस्तु के लिए आकर्षण निर्माण हुआ है।

'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास का छोटू भी कार का शौकिन है। कॉलेज के जमाने में वह कार हमेशा अपने कब्जे में लेता है। मम्मी पापा को कार नहीं ले जाने देता। शादी के बाद छोटू के गैरवर्तन से चिढ़कर पापा उसके कार की चाबी छीन लेते है। इससे छोटू बहुत दुखी होता है। फिर उसकी पत्नी उसे मनाने के लिए कार की चाबी ससूर से माँगकर छोटू को वापिस देती है। इस तरह आज समाज में आधुनिक साधनों पर व्यक्ति

के रिश्ते टिके हुए हैं।

मनुष्य अपने घर, ऑफिस में आधुनिक साधनों का उपयोग कर रहा है। जिससे उसका आधुनिक साधनों के प्रति,जो आकर्षण है वह स्पष्ट होता हैं। हर बड़ा अफ़सर अपना ऑफिस अच्छा रखना चाहता है। जैसे वह अपना चेहरा में केशवदास के ऑफिस का शुक्ला इस तरह वर्णन करता है कि - "एक अच्छा-खासा कमरा, कई ज्वाइन्ट सेक्रेटरी के कमरों से भी बड़ा। एक तरफ लंच के लिए पार्टीशन, सोफा, मेज पर रोबीला लैम्प, घूमती कुर्सी और पीछे हिंदुस्तान का एक बड़ा नक्शा।"[39]

इनमें से कुछ साधन जो आधुनिक है जिससे कमरे की शोभा बढ़ी है। तुम्हारी रोशनी में की सुवर्णा का ऑफिस भी वातानुकूलित है। जिससे बड़ी हस्तियों को आराम मिलता हैं। ऑफिस के बाद मुख्यतया घर में भी आधुनिक साधन पाए जाते है। जैसे लाल पीली जमीन उपन्यास में बोस साहब का घर, सोफे, कार्पेट, साईड टेबिल सनमाइक का हैं। इस तरह आधुनिक साधनों के आकर्षण से घर की सजावट की जाती है। तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की नायिका सुवर्णा के घर में सब आधुनिक साधन है। जैसे सर्दी के लिए हिटर,गर्मी के लिए कूलर , फ्रीज है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास के श्याम को भी आधुनिक साधनों का आकर्षण बहुत है। लेखक लिखते हैं -

"श्याम उन चीजों के लिए दौड़ता - फिरता है जिन्हें रखने के लिए घर में ठौर भी नहीं, उसे भी डबल-बैड चाहिए, डायनिंग टेबिल, फ्रिज, टी.वी.चाहिए।"[40] इस तरह श्याम जैसे साधारण लोक भी आधुनिक साधनों को पाने का प्रयत्न करते हैं।

राजन के घर संगेमरमर का टेबिल लैम्प देखकर ओमी सोचती है, उनके घर में वैसा लैम्प क्यों नहीं । ओमी तथा मोहन आने पर राजन के बच्चे उन्हें अकेला छोड़ रेकॉर्ड पर रौक म्यूजिक सुनते हैं। बिट्टो ओमी से कहती है -

"आंटी, टी.वी. में फिल्म का समय हो गया। देखेंगी टी.वी.खोल ले।"[41] इस तरह टी.वी., रेकॉर्ड की वजह से आज मनुष्य की कीमत कम हो रही हैं। नई पीढ़ी इन आधुनिक साधनों के आकर्षण से व्यवहारी बनती चली जा रही है।

इस तरह मिश्र जी ने उपन्यासों द्वारा समाज में स्थित आधुनिक साधनों का आकर्षण स्पष्ट किया है।

3.16 **सांस्कृतिक परिस्थिति :-**

भारतीय संस्कृति आदर्श हैं। संस्कृति में मनुष्य के जीवन जीने की पद्धति को महत्त्व हैं। लोकव्यवहार, आचार-विचार, रहन-सहन, उत्सव-पर्व, त्यौहार, मनोरंजन, खेल आदि ऐसे ही कई महत्त्वपूर्ण पक्ष संस्कृति में सम्मिलित किए जाते हैं। लेकिन समय परिवर्तन के कारण सांस्कृतिक परिस्थिति बदलती रहती

हैं। मिश्र जी ने उपन्यासों में स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले तथा बाद के समाज की संस्कृति को स्पष्ट किया हैं।

मिश्र जी ने वह अपना चेहरा उपन्यास में भारतीय संस्कृति के साहित्य, चित्रकारी, मुशायरें, ड्रामा आदि का जिक्र मुख्य पात्रों से करवाकर कलात्मक संस्कृति को स्पष्ट किया है। आज शहरों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। इसी वजह से औपचारिकता बढ़ने लगी है, जो एक संस्कृति बन गई है। केशवदास और मि.शुक्ल के संबंध पहले अच्छे थे, बाद में कुछ तनावात्मक होने पर केशवदास शुक्ला के साथ औपचारिकता दिखाई देती हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में मोहन और ओमी राजन के घर जाते है, तब आत्मीयता से बातें नहीं होती औपचारिकता ही चलती हैं। विदेशी संस्कृति आने से विवाह पद्धतियों में परिवर्तन हुए हैं। आज विवाह के बाद शहरों में रिसेप्शन की संस्कृति दिखाई देती हैं - जैसे छोटू के शादी का रिसेप्शन।

आज एकल परिवार की संस्कृति दिखाई देती हैं। जैसे वह अपना चेहरा के केशवदास का परिवार, तुम्हारी रोशनी में, सुवर्णा का परिवार, लाल पीली जमीन के केशव, मास्टर कंठी, मास्टर कौशल आदि तथा पाँच आँगनोवाला घर के श्याम, मोहन, राजन। इस एकल परिवार में आधुनिक साधनों का आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है। हर व्यक्ति उन साधनों को अपने घर में होना अनिवार्य समझता है - जैसे टी.व्ही. फ्रिज, रेकॉर्डर आदि वस्तुएँ, सुवर्णा, राजन के परिवार में दिखाई देती है, जो आधुनिक संस्कृति का परिचय करा देती हैं।

मिश्र जी ने लाल पीली जमीन में मुहल्ले के सभी लोगों को संस्कृति प्रिय दिखाया है। जैसे जादव जी के घर के विवाह में बारात, मिठाई, पालकी, सारे मुहल्ले को रंगी-बिरंगी कागजों से सजाना, कई दिनों तक मंड़प रखना, औरतों का गाना। इस तरह विवाह संपन्न कराए जाते है। पाँच आँगनोवाला घर में भी राजन की शादी में बारात तथा सुहागरातवाली कोठी की परंपरा को जारी रखा गया ।

छोटे बच्चों के खेल आदि सांस्कृतिक परिस्थिति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। लाल पीली जमीन उपन्यास में केशव तथा केशव के मित्रों का गुल्लीडंड़ा खेलना, चिओं का खेल, लुकाछिपि आदि खेल खेलते रहते हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास का राजन तथा अन्य मित्र पतंग उड़ाने में मजा लेते हैं। लाल पीली जमीन में कल्लन तथा शिवराम कुश्ती, तीतर लड़ना, दंड़बैठक, ताश आदि मनोरंजनात्मक खेल खेलते हैं। पाँच आँगनोवाला घर में नाच गाना, शेरोशायरी, कवि सम्मेलन, सभी वाद्य बजाना आदि मनोरंजनात्मक कार्यक्रम दिखाई देते हैं, जो संस्कृति को जीवित रखते हैं। लाल पीली जमीन उपन्यास में मुहल्ले के लोग उत्सव धूम-धाम से मनाते है - जैसे रामलिला, गोवर्धनधारी का मेला, कृष्णजन्माष्टमी की झांकिया उसे देखने के लिए कई गाँव के लोग आते हैं। इस उत्सव, त्यौहारों में छोटों के साथ बड़े भी उत्साह से सहभागी होते हैं। नौटंकियाँ भी खेली जाती हैं। पाँच आँगनोवाला घर में संक्रांति उत्सव धूम-धाम से मनाया जाता तथा कई बार घर में नौटंकी, रामलीला होती हैं। कार्तिक स्नान के लिए औरतें, साधू-संन्यासी पंचगंगा धाट पर जाते हुए दिखाई देते हैं। इलाहाबाद के कुंभ मेले को सन्नो का जाना, चित्रकुट प्रमोद वन में पूजा पाठ करते धार्मिक लोग आदि सांस्कृतिक स्थानों को लेखक ने अपने उपन्यास में चित्रित किया है। नई की चाची का घूँघट ओढ़ना, बहू को राजन के पैर

छूने का आदेश देना तथा रम्मो भी पहले घर के सब लोगों के पैर छू कर उनको आदर देती हैं। इस तरह मिश्र जी ने पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में सांस्कृतिक परिवेश को विस्तार से चित्रित किया हैं।

मिश्र जी ने भारतीय संस्कृति को अपने उपन्यासों द्वारा स्पष्ट कर समाज की सांस्कृतिक परिस्थिति सामने रखी हैं।

3.17 **विवाह संस्था :-**

भारतीय समाज में विवाह को बहुत महत्त्व है क्योंकि, विवाह संस्था ही एक ऐसी संस्था है। जिसके कारण स्त्री-पुरूष एकत्र रहकर अपनी कामवासना की तृप्ति करते हैं। विवाह के पश्चात् प्राप्त होनेवाली संतान को समाज स्वीकारता है। लेकिन विवाह के पहले होनेवाली संतान को समाज प्रताड़ित करता है। इस तरह विवाह संस्था के जरिए हम एक दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति के लिए खुद को बाध्य पाते हैं, तथा अतृप्त कामवासना पर सामाजिक नियंत्रण रखकर एक दूसरे के प्रति समर्पण, प्रेम, त्याग की भावना से वैवाहिक जीवन बिताते हैं। विवाह संस्था में अनेक प्रकार के विवाह हाते हैं जैसे - बहुविवाह, अंतर्जातीय विवाह, अनमेल विवाह,। कभी - कभी यह विवाह असफल होते हैं और विवाह विच्छेद भी होते हैं। तो कई बार विवाह अनेक कारणों से होते ही नहीं अगर होते है तो उन्हे विलंबित विवाह कहा जाता हैं। अत: मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में, समाज में स्थित उपर्युक्त विवाह का वर्णन किया है।

3.17.1 **बहुविवाह :-**

समाज में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई धर्म में बहुपत्नीत्त्व या बहुविवाह होते रहे हैं। राम आहूजा लिखते हैं -

"आरंभिक हिंदू समाज में सशर्त बहुपत्नीत्त्व विवाह ही प्रचलन में था।"[42]

इस तरह हिंदू समाज में प्राचीन काल से लेकर आज तक बहुविवाह होते हैं, जो सभ्य समाज के लिए ठीक बात नहीं है। क्योंकि इस विवाह से नारी को ही घुटनभरी जिंदगी बितानी पड़ती है। मिश्र जी ने लाल पीली जमीन उपन्यास में बहुविवाह का वर्णन किया है। थल्ले सुनार का पहला विवाह हो चुका था लेखक लिखते हैं -

"थल्ले सुनार मस्त कलंदर धूर काला पहाड़ की तरह और उसकी दूसरें ब्याह की बहू नाठी और गढ़ी गढ़ी सी।"[43] लेखक ने दूसरा उदाहरण सर्वेश का दिया है - "लक्ष्मण के दद्दा बिचके थे क्योंकि, सर्वेश की तीन पत्नियाँ मर चुकी थी।"[44] यहाँ सर्वेश की तीन पत्नियाँ पहले ही मर चुकी हैं और चौथा विवाह मालती के साथ करना चाहता है, और वह संपन्न भी होता है।

इस तरह मिश्र जी ने समाज में होते बहुविवाह को थल्ले सुनार तथा सर्वेश के माध्यम से स्पष्ट किया है।

3.17.2 **अंतर्जातीय विवाह :-**

अंतर्जातीय विवाह को समाज मान्यता नहीं देता है। लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा प्रसार और समाजसुधारकों के कार्य से अंतर्जातीय विवाह को समाज थोड़ी मात्रा में स्वीकार करता दिखाई दे रहा है। मिश्र जी ने वह अपना चेहरा उपन्यास में सिनिअर अफ़सर केशवदास का विवाह अंतर्जातीय दिखाया है। मि.शुक्ला केशवदास की बेटी रेश्मा के बारे में सोचते हैं - "क्या उसका डैडी किसी श्रेणी में आता था ..... हो सकता है ऐसा हो क्योंकि इतना तो तय था कि मुसलमान और हिंदू बाप की यह लड़की अब तक बेहद अकेली रही थी।"[45] यहाँ अंतर्जातीय विवाह से समाज की उनके बच्चों की तरफ देखने की दृष्टि अलग ही है।

3.17.3 **अनमेल विवाह :-**

समाज में दहेज न देने के कारण अंधश्रद्धा, वैचारिक भिन्नता के कारण अनमेल विवाह होते है। कस्बाई क्षेत्र, गाँव, शहरों में अनमेल विवाह देखने मिलते हैं। मिश्र जी ने कस्बाई क्षेत्र के अनमेल विवाह का चित्रण लाल पीली जमीन उपन्यास के सर्वेश और मालती के विवाह को दिखाकर किया है। सर्वेश अधेड़ विधूर है। मालती की मर्जी जाने बगैर इनका विवाह संपन्न किया जाता है। लेखक लिखते हैं -

"शादी के बाद उम्र में कई साल बड़े सर्वेश की बराबरी पर आने की कोशिश करते-करते वह खुद प्रौढ़ा हो गई।"[46] यहाँ मालती अनमेल विवाह का शिकार बनी है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में छोटू का विवाह अनमेल विवाह को स्पष्ट करता है। छोटू अपनी पत्नी के साथ नहीं रहना चाहता, क्योंकि वह उसके मुताबिक नहीं चलती। पत्नी को छोटू की बुरी आदतें पसंद नहीं हैं। दोनों में हमेशा कडुवाहट टकराव ही दिखाई देती है इसी कारण उनमें जरा भी मेल नहीं है। यहाँ उपन्यास में चित्रित अनमेल विवाह स्त्री-पुरूष को उजाड़कर रख देता है।

मिश्र जी ने उपर्युक्त दो विवाह को प्रतिनिधि बनाकर समाज में स्थित अनमेल विवाह को दिखाया है।

3.17.4 **विलंबित विवाह :-**

भारत में विवाह को पवित्र बंधन माना जाता है। इसी कारण भारतीय स्त्री-पुरुष के लिए विवाह पून:र्जन्म होनेवाली बात है। आधुनिक काल में समाज में उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले मनुष्य की उम्र बढ़ती है जिससे उसका विवाह देरी से होता है और लड़की का रूप अगर फिका है तो विवाह को विलंब होता है। कुछ लोग

ऐसे होते हैं, जिनके विवाह अन्य कुछ छोटे-मोटे कारणों से जल्दी नहीं होते। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा विलंबित विवाह को स्पष्ट किया है।

लाल पीली जमीन में जादव जी की लड़की थोड़ी सावली और मोटी है, जिसके कारण उससे कोई विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता। इसी वजह से उसका विवाह जल्दी तय नहीं होता। लेकिन चतुर जादव जी आखिर में धोखे बाजी से देखने आए लड़के को अपनी लड़की के प्रेम जाल में फँसाते हैं और विवाह को संपन्न कराते हैं। इस तरह आज विवाह संस्था में धोखे बाजी दिखाई देती हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में सन्नी चाचा के विवाह की समस्या दिखाई देती है। सन्नी कायस्थ है उन्हें सारंगी बजाने का शौक है। वे प्रोग्रॅमों के कारण बाहर घूमते हैं। सन्नी का यह बर्ताव अन्य रिश्तेदारों को पसंद नहीं है। लेखक इस पर टिपण्णी करते हैं - "कौन कायस्थ सारंगियाँ को देता अपनी लड़की, तो सन्नी हनुमान जी के भक्त हो गए।"[47]

इस तरह विलंबित विवाह के कारण सन्नी आखिर तक कुँवारे ही रहते है।

मिश्र जी ने समाज में स्थित विलंबित विवाह को स्पष्ट किया है। जिससे कभी-कभी विवाह संस्था में धोखेबाजी, अविवाहित प्रौढ़ दिखाई देते हैं।

3.17.5 **विवाह विच्छेद :-**

आज विवाह संस्था में विवाह विच्छेद दिखाई देते हैं, जो समाज जीवन का महत्त्वपूर्ण पहलू बन गया है। विवाह विच्छेद के गई कारण है - जैसे नारी की पुरूष समानाधिकार की मन्शा, तथा व्यक्ति स्वातंत्र की माँग, विवाहित स्त्री का पर पुरूष से संबंध तथा विवाहित पुरूष का पर स्त्री से संबंध, पति-पत्नी का वैचारिक अनमेल इन्ही कारणों से विवाह विच्छेद होते रहते है। सजग रचनाकार विवाह की इस भयावह स्थिति का अपने साहित्य में वर्णन करना आवश्यक समझता है। मिश्र जी सजग लेखक होने से वे अपने उपन्यासों में इसी विवाह-विच्छेद का वर्णन करते हैं।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास में सुवर्णा और रमेश जैसे दांपति का विवाह विच्छेद दिखाया है। सुवर्णा का अपने मित्रों से खुला व्यवहार उसे पसंद नहीं हैं। अत: वह सुवर्णा पर बंदिश लगाता हैं। अनंत सुवर्णा को रमेश को समझाने की सलाह देता है तब सुवर्णा कहती है -

"समझाना वह मारपीट पर आता है, दो बार उसने मुझे थप्पड़ मारा, ये तमाम साल मैं एक जानवर के साथ रह रही थी।"[48] इस तरह सुवर्णा के दिल में रमेश के लिए नफरत है और रमेश का सहकर्मी उर्वशी के साथ शारीरिक संबंध होने का पता सुवर्णा को लगता है। इन्हीं कारणों से सुवर्णा और रमेश का विवाह विच्छेद हो जाता है। इस तरह शिक्षित नौकरी पेशा दांपति का विवाह विच्छेद दिखाया है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में छोटू का विवाह विच्छेद हो जाता है। छोटू विदेशी संस्कृति का

अनुकर्ता है। वह चाहता है कि उसकी बीवी भी वैसी ही मॉडर्न रहें। पत्नी का यूँ टिपीकल भारतीय नारी रहना उसे पसंद नहीं और पत्नी को छोटू का विदेशी आचरण, व्यसनाधीनता पसंद नहीं। इसी वजह से आखिर छोटू अपनी पत्नी से तलाख़ लेता है। छोटू का बड़ा भाई बंटू का भी विदेश में परिवार टूटता है।

इस तरह मिश्र जी ने उपन्यासों द्वारा समाज में स्थित असफल विवाह संस्था का विवाह विच्छेद दिखाकर वर्णन किया हैं।

मिश्र जी ने भारतीय विवाह संस्था के बहुविवाह, अंतर्जातीय, अनमेल विवाह तथा विलंबित विवाह, विवाह विच्छेद आदि का यथार्थ वर्णन कर भारतीय विवाह संस्था को पाठकों के सामने समाज के अनिवार्य अंग के रूप में स्पष्ट किया है।

3.18 परिवार संस्था :-

समाज में स्थित अनेक संस्थाओं में से एक परिवार संस्था है, जो समाज की प्रथमावस्था है। परिवार में मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने के प्रयत्न किए जाते हैं, जिससे समाज की उन्नति होती है। अत: मनुष्य में प्रेम, सद्भावना, रिश्तेदारी, धार्मिकता ऐसी भावनाएँ निर्माण कर उसे समाज प्रिय बनाया जाता हैं। परिवार की दो पद्धतियाँ अधिक मात्रा में दिखाई देती है - संयुक्त और एकल या विघटित परिवार। नाना-नानी से लेकर चचेरे भाई-बहन, पोते-पोतियाँ तथा अन्य रिश्तेदारों से मिलकर संयुक्त परिवार बनता हैं। तो विघटित (एकल) परिवार में पति-पत्नी बच्चे इनके सिवा कोई नहीं रहता। मिश्र जी ने उपन्यासों में समाज में स्थित संयुक्त परिवार ओर एकल तथा विघटित परिवार का वर्णन किया हैं।

3.18.1 संयुक्त परिवार :-

लाल पीली जमीन उपन्यास में जादव जी के संयुक्त परिवार का वर्णन किया है। जिसमें औरतों को घर से बाहर जाने की बंदिश है। घर में ही सब उत्सव, त्यौहार मनाएँ जाते हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व के जोगेश्वरी देवी के संयुक्त परिवार का वर्णन किया है। जिस में जोगेश्वरी देवी के चार बेटे, उनके बेटे तथा घर के अन्य रिश्तेदार जैसे - चचेरे भाई, ममेरे भाई इसमें शामिल है। जोगेश्वरी पति की मृत्यु के पश्चात् परिवार का बोझ अपने कंधों पर लेती है। उसे बड़ा बेटा हर काम में साथ देता है। जो बाद में घर का मुखिया बनता है। लेकिन जोगेश्वरी कुशल मैनेजर की तरह हर औरत को काम बाँट देती हैं। सब लड़के कमा कर उसके पास पैसे देते है, बाद में वह सबको खर्चे के लिए दे देती है। इस तरह यहाँ असल में मातृसत्ताक पद्धति का यह परिवार प्रतिनिधित्व करता है। स्नेह, ममता, त्याग, सहकार्य की भावना मुशायरा, कवि सम्मेलन, मुजरा आदि कई फल से युक्त कार्यक्रम इस परिवार में संपन्न होते हैं। राधेलाल के सुराजी बनने तथा मृत्यु के बाद जोगेश्वरी देवी घर का पूरा खयाल रखती है।

इस तरह संयुक्त परिवार में उत्सव, त्यौहार, खेल, मनोरंजन, सुरक्षा आदि दिखाकर मिश्र जी ने समाज की परिवार संस्था में स्थित संयुक्त परिवार का आदर्श रूप दिखाया है।

3.18.2 एकल तथा विघटित परिवार :-

भारतीय समाज में स्वतंत्रता के बाद एकल परिवार या विघटित परिवार सामने आए हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा समाज में स्थित एकल परिवार का वर्णन किया है। आर्थिक तनाव के कारण पत्नी का नौकरी करना, दुखद घटना से एकल परिवार का बिखर जाना, परिवार में बाहरी संस्थाओं का हस्तक्षेप आदि। एकल परिवार की महत्त्वपूर्ण बातों के साथ उपर्युक्त परिवार की स्थिति को प्रस्तुत किया है।

लाल पीली जमीन में केशव का परिवार एकल परिवार है। केशव की माँ शिक्षिका है, जिसके कारण वह परिवार की कुछ जिम्मेदारियाँ अपने हाथ लेती है। तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की सुवर्णा का परिवार भी एकल परिवार है और सुवर्णा एक उच्चपदस्त अफ़सर है। जो परिवार की कुछ जिम्मेदारियाँ उठाती हैं।

परिवार में कोई आकस्मिक घटना होने से एकल परिवार पूरा बिखर जाता है - जैसे लाल पीली जमीन के बोस साहब के छोटे बेटे की मृत्यु ने बोस की पत्नी को मनोरूग्ण बना दिया है। शैलजा को भगाकर उसकी जबरदस्ती से शादी कराना यह घटना मास्टर कौशल के एकल परिवार को बिखरा देती है। तथा पाँच आँगनोवाला घर के मुखिया राधेलाल जी का सुराजी बनकर घर छोड़ना उनके परिवार को आर्थिक विपन्नता के खाई में ढकेल देता है।

आज एकल परिवार में बाहरी संस्थाओं का महत्त्व बढ़ गया है - अस्पताल, होटल जैसी कई संस्थाएँ अपना महत्त्व बढ़ा रही हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन के बड़े भैया-भाभी मुंबई में राजन के घर न ठहरकर होटल में ठहरते हैं। यह बात राजन को बहुत खटकती है, तब बेटा छोटू उसे कहता है -

"कम ऑन पापा - होटेल इज एनी डे मोर कम्फोर्टेबल देन हौम। इफ दे कॅन ऐफर्ड इट, व्हाई नॉट ..... आप क्यों परेशान होते है ?" [49]

बाहरी संस्था से रिश्तों में दरार पड़ती दिखाई देती है। राजन के दिल के ऑपरेशन के वक्त रम्मो बंटू को फोन करके बुलाती है,तब बंटू फोन कर कहता है - "उन्हें अच्छे हॉस्पिटल में भारती करा दीजिएगा। आगे कहता है - मैं आकर क्या करूँगा । मम्मी जो करना है वह डॉक्टरों को।"[50] इस तरह बाहरी संस्था आज एकल परिवार को और भी एकल बना रही है।

संयुक्त परिवार के विघटन से एकल परिवार अंत तक एकल ही रहते। भविष्य में फिर कभी संयुक्त होने का नाम नहीं लेते हैं, जैसे लाल पीली जमीन के बोस साहब का घर। बड़े बेटे के घर छोड़कर अलग परिवार बनाने से उनका परिवार एकल बनता है। पाँच आँगनोवाला घर की बड़ी अम्मा का संयुक्त परिवार टूटता है, उसके चारों बेटे अलग रहते हैं। तथा बहू शांति के तीनों बेटे, अपना-अपना अलग परिवार बनाते हैं - जैसे

श्याम कलकत्ते में, मोहन दिल्ली में और राजन मुंबई में। दोनों साँस बहू विघटित परिवार का सद्‌मा सहन न होने से दुनिया से चल बसती हैं। राजन की तीनों संताने बड़ी होने के बाद घर छोड़कर अपना-अपना परिवार बनाते हैं - जैसे बंटू अमेरिका में ऐलिस के साथ, छोटू मालाड के फ्लॅट में अकेला रहता है। उसका भी विवाह विच्छेद होकर परिवार बनने से पहले ही विघटित होता है और बिट्‌टो अपने ससूराल में। इस तरह राजन जब बीमार पड़ता है तब बीमारी में एक भी बेटा उसे मिलने नहीं आता। मिश्र जी ने एकल परिवार की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है।

मानव के परस्पर संबंधों पर अनेक संस्थाएँ निर्भर रहती हैं - जैसे विवाह संस्था, परिवार संस्था स्त्री-पुरूष के संबंध पर अवलंबित रहती हैं। इसी वजह से समाज मान्य स्त्री-पुरूष संबंधों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इन संबंधों से कामवृत्ति का समाधान ढूँढ़ा जाता है और इससे ही विवाह संस्था का निर्माण हुआ है। आधुनिकीकरण, शिक्षा से स्त्री-पुरुष के संबंधों में परिवर्तन आया है। आज शिक्षित, नोकरी पेशा नारी, व्यक्ति स्वतंत्रता के कारण काम के निमित्त तथा अन्य कारणों से उसके पर-पुरुष से संबंध बढ़े है। जो पहले पति, भाई, पिता अन्य पारिवारिक सदस्यों तक ही मर्यादित थे। अत: आज वह व्यापक बन गए हैं। जिसके सहारे आज का समाज अपना जीवन बीता रहा है।

मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में समाज में स्थित स्त्री-पुरूष संबंध का महत्त्वपूर्ण पक्ष सामने रखा है। इन संबंधों को इस तरह विभाजित किया हैं।

3.19.1 आत्मीक प्रेम संबंध :-

प्रेम जैसी शीतल भावना के बिना मनुष्य अधुरा है। यहीं प्रेम जब यौवन में स्त्री और पुरुष में निर्माण होता है। तब दोनों एक दूसरें के प्रति समर्पित होने के लिए उत्सुक होते हैं। प्रेम सिर्फ पति-पत्नी में ही नहीं होता बल्कि दोस्त-दोस्त में, भाई-बहन, माँ-बेटी-बेटा, देवर-भाभी, गुरू-शिष्य आदि में भी होता है। संसार में कई ऐसे रिश्ते हैं जिन में पवित्र प्रेम होता है। कभी-कभी यह प्रेम इतना स्थायी होता हैं कि, वह आत्मीक बनता है, जिसमें वासना का अंश मात्र नहीं होता है। समर्पण, त्याग, आदर, निस्वार्थी, वासनारहित होता है। मिश्र जी के उपन्यासों द्वारा समाज में स्थित इस प्रेम को देखा जा सकता है।

वह अपना चेहरा उपन्यास का नायक शुक्ला मिस रचना से ट्रेनिंग कॉलेज से ही प्रेम करता आया है। लेकिन शुक्ला ने इसे कभी जाहिर नहीं किया। कुछ सालों बाद उन दोनों की नियुक्ति एक ही शहर में एक ही ऑफिस में होती हैं। लेकिन रचना तब बदल चुकी होती है। वह सिनिअर अफ़सर केशवदास के साथ अनैतिक संबंध रखती हैं। लेकिन शुक्ला अंदर से तिलमिला उठता है। रचना को कई बार बताने की कोशिश करता है, लेकिन वह कह नहीं पाता। कई दिन इसी तनावों में जीता है। अत: उसके दिमाग में रचना और केशवदास ही रहते हैं। आखिर वह रचना को चूम कर ही अपना प्रेम भाव प्रकट करता है। शुक्ला समाज के उन प्रेमी का

प्रतिनिधित्व करता है, जो कुछ कहने की हिम्मत नहीं करते। अंदर-ही-अंदर विरहाग्नि में जलते रहते हैं।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की सुवर्णा और मित्र अनंत का आत्मीक प्रेम दिखाई देता है। अनंत अपनी डायरी में लिखता है कि -

"सुवर्णा के निर्मल तत्त्व से मेरा साक्षात्कार निरंतर रहेगा उसके लिए मैं जो आलोकमय अनुराग अनुभव कर रहा था वह अपूर्व था सब में स्थिर अनुराग। उसके अंतरतम के दीप्ति मंड़ल की आभा मेरी आत्मा में प्रकाश भर रही थी।"[51] इस तरह अनंत सुवर्णा के लिए सहृदय से प्रेम महसूस करता है। सुवर्णा भी उसकी नाजूक स्थिति में अनंत पर वासनारहित दोस्तीनुमा प्रेम करती है। अनंत की रोशनी में वह अपनी राह चलती है। क्योंकि, अनंत उसे समझता है, उसे ढाढ़स बँधाता है। अनंत के शादी के प्रस्ताव को वह इन्कार करती है, क्योंकि उसे लगता है कि वह भी आगे पति रमेश जैसा बनेगा और वह एक दोस्त को खो देगी। अंत में वह अनंत की दोस्ती को अपनी रोशनी मानकर उसके और अपने संबंध आत्मीय बनाती है। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर लिखते हैं -

"तुम्हारी रोशनी में इस तथ्य को साग्रह रेखांकित करता है कि, नारी-मुक्ति की सार्थकता हार्दिक, पारस्परिक और आत्मीय प्रेम में है।"[52] इस तरह सुवर्णा की तरफ आकर्षित होनेवाले हर पुरूष को वह प्रतिसाद देती है। विवाहिता होने के नाते वैवाहिक बंधन के प्रति इमानदार है। सिर्फ दोस्तों की बातें सुनना, उनमें नया कुछ ढूँढ़ना जो पति रमेश में नहीं है। इस तरह के स्त्री-पुरूष संबंधों के कारण आधुनिक काल में बदलाव दिखाई देता है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन तथा भाभी ओमी के स्नेह भरे आत्मीक संबंध है, राजन को ओमी से पुत्रवत् सा स्नेह मिलता है। ओमी का राजन को पैसे देना खाना-खाने के लिए इंतजार करना आदि। उस पर लेखक टिपण्णी करता हैं कि -

"राजन जब इलाहाबाद पढ़ने चला गया तब स्नेह से ज्यादा ओमी उसके लिए तड़प-तड़प उठी जैसे पहले जो बेटा था। वह अब स्नेह के माध्यम से प्रेमी हो गया है।"[53] यहाँ राजन और भाभी ओमी के संबंध को कई नाम दिए जा सकते हैं - जैसे प्रेमी-प्रेमिका, माँ-बेटे, देवर-भाभी। समाज में देवर-भाभी के संबंध इस प्रकार ही होते हैं। जिस में पवित्र प्रेम की भावना दिखाई देती है।

समाज में पग-पग पर दिखाई देनेवाले स्त्री-पुरूष के प्रेम और आत्मीक प्रेम के संबंधों का वर्णन मिश्र जी ने किया है।

3.19.2 **यौन संबंध :-**

स्त्री-पुरूष संबंध में यौन संबंधों को महत्त्व दिया जाता है। डॉ.वीणा गौतम के मतानुसार - "यौन वृत्ति एक प्राकृतिक सत्य है इस प्राकृतिक सत्य के विपरीत आज तक कोई मानव आचरण नहीं कर पाया। इसलिए यौन वृत्ति शरीर की प्राकृतिक आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता भी है।"[54] इस तरह यौन संबंध बनते हैं।

यौन संबंधों की मर्यादा के लिए विवाह संस्था का निर्माण समाज में हुआ है। लेकिन बदलती परिस्थिति मे विवाह संस्था का महत्त्व कम हो गया। आज प्रेम और यौन को अलग देखा गया है, इसी कारण आत्मीक प्रेम के विकृत रूप को यौन-संबंध कहा जाने लगा। अत: मनुष्य की अतृप्त वासना का शमन करने के लिए स्त्री-पुरूषों के बीच ऐसे यौन संबंध बनते हैं। इन संबंधों को समाज से छिपाकर स्त्री-पुरूष अपने शरीर की प्यास बुझाते हैं। मिश्र जी ने समाज के हर स्तर पर ऐसे संबंध को बनते देखा है, जो सभ्य समाज के लिए एक समस्या बनी हुई है।

वह अपना चेहरा उपन्यास में मिस रचना अजवानी और उसका सिनिअर अफ़सर केशवदास इन दोनों में यौन संबंध हैं। शुक्ला के मुँह से लेखक ने इसे स्पष्ट किया हैं जैसे -

"रचना और उसके (केशवदास) संबंध काफी करीब बताएँ जाते थे, रचना को हर उम्दा तैनाती वक्त से पहले ही मिलती चली गई थी .... इसके पीछे जो राज था वह उसका केशवदास से संबंध बताया जाता था।"[55] शुक्ला और अमरू को केशवदास रचना के कमरे में दिखाई पड़ता है तब यह सुनी-सुनाई बात साबित होती है। इस तरह आज समाज में कुछ शिक्षित नारियाँ तरक्की के लिए अन्य पुरूषों से यौन संबंध रखती हैं। शुक्ला केशवदास की बेटी रेश्मा से कुछ दिनों के लिए ऐसे संबंध रखता है, जब कि वह प्यार रचना से करता है। रेश्मा को शुक्ला मित्र सी.डी. के फॉर्म हाऊस पर ले जाता है तब शुक्ला का इरादा कुछ और ही होता है। तब वह कहता है - "हम थोड़ी दूर से ही ऐसे ही चलते रहे जब उस टहलाव से बोरियत महसूस होने लगी तो उसे रोककर मैंने उसका मुँह उठाया और आँखोंको चुमा।"[56] इस तरह शुक्ला अपनी शारीरिक प्यास बुझाना चाहता है। अत: शुक्ला का रचना को भी चूमना उसके प्रति जो आत्मीक प्रेम था वह नष्ट होकर उसका विकृत प्रवृत्ति का यौन संबंध बना।

लाल पीली जमीन उपन्यास में युवावर्ग के साथ बड़े लोगों में यौन संबंध दिखाई देते हैं। सुरेश, कल्लू जैसे युवा यौन तृप्ती की प्यास बुझाने के लिए लड़कियों को भगाकर उनको बेइज्जत करते हैं। अत: कुछ लड़के नदी पर नहाती औरतों को छिप कर देखते हैं। इस तरह बच्चों की यौन वृत्ति यहाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। केशव की माँ तथा केशव के मुँहबोले मामा दोनों के यौन संबंध हैं। इसी कारण मुहल्ले का हर कोई उन्हें ताने देता है, तथा उनके घर पर पत्थर फेंकते हैं। अन्य पात्र पंड़ित का एक विधवा औरत के साथ यौन संबंध है, जो कुछ दिनों बाद उस औरत के भाग जाने से खत्म होते हैं। लेखक के कस्बाई क्षेत्र तथा गली मुहल्ले में स्थित यौन संबंध पर प्रकाश डाला है।

तुम्हारी रोशनी में लेखक ने शिक्षित नौकरी पेशा उच्च मध्यवर्गीय नारी तथा पुरूष के बीच स्थित यौन संबंधों को समाज के सामने रखा है। सुवर्णा शादीशुदा है, इसी कारण वह अपने मित्रों में से सोम, दीपक, विनय जो सुवर्णा के शरीर को पाने का हमेशा प्रयत्न करते हैं। लेकिन सुवर्णा उन्हें रोकने में सफल होती है। यहाँ सुवर्णा के मित्र यौन प्रवृत्ति से ग्रासित हैं। सुवर्णा का पति रमेश सहकर्मी उर्वशी के साथ यौन संबंध रखता है, जो

आज के कुछ नौकरी पेशा नारी और पुरूष के यौन संबंध का प्रतिनिधित्त्व करता है।

मिश्र जी ने यहाँ यौन प्रवृत्ति को सामने रखकर इस संबंध से भारतीय विवाह तथा संस्कृति के नैतिक मूल्य ढहते हुए दिखाए हैं। अत: आज मानव स्वार्थी होता चला जा रहा है। अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए भी ऐसे संबंध बनाता है और वह खुद को कभी अपराधी महसूस नहीं करता है।

3.19.3 **सुखमय दांपत्य संबंध :-**

विवाह ही समाज मान्यता की मोहर है। जिससे एक स्त्री और एक पुरूष साथ-साथ रहकर अपना दांपत्य जीवन व्यतित करते हैं। समाज में माता-पिता की मर्जी के नुसार तथा खुद की पसंद से किए हुए विवाह, बहुत मात्रा में सफल होते हैं। दोनों पद्धतियों में पति-पत्नी समझदारी से सुखी, समाधानी, शांती से अपना सुखमय दांपत्य जीवन बीताते हैं। इससे उनकी संतान पर अच्छे संस्कार होते हैं और वह एक आदर्श नागरिक बनकर समाज में अपना स्थान बनाता है। हिंदी के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में सुखमय दांपत्य संबंध का यथार्थ वर्णन कर विषम दांपत्य संबंध के आगे प्रश्न चिन्ह लगाया है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में सुखमय दांपत्य संबंध का चित्रण किया है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की नायिका सुवर्णा का दांपत्य जीवन सुखी था। जब वह पहले अनंत से मिलती है तब अपने सुखमय दांपत्य संबंध का इस प्रकार वर्णन करती है -

"देखिए बड़ा मुश्किल होता है, इस पर निर्भर करता है कि आप सुख से क्या समझते हैं। मेरे पास एक अच्छी-खाँसी नौकरी है, पारिवारिक जीवन सुखी है माँ बाप, सास-ससुर सब अच्छे हैं।"[57] यहाँ सुवर्णा के वक्तव्य से यह मालूम होता है कि, उसका दांपत्य जीवन बहुत सुख-चैन, समाधान से बीत रहा है क्योंकि पति रमेश उस पर कोई बंदिश नहीं लगता। सुवर्णा अपनी मर्जी के नुसार परिवार चलाती है, उसके बच्चे, पति और वह खुश है। इस तरह लेखक ने यहाँ उच्चवर्गीय नौकरी पेशा आधुनिक स्त्री-पुरूष के सुखी दांपत्य संबंध का वर्णन भी किया है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में स्थित कुछ परिवार सुखमय दाम्पत्य संबंध का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। जोगेश्वरी देवी का दांपत्य जीवन सुखी था। पति की मृत्यु के बाद उसने घर की सारी जिम्मेदारी अपने उपर ली है। चार बेटे और उनकी पत्नियाँ बच्चे सब सुख से घर में रहते हैं। बड़ा बेटा राधेलाल जोगेश्वरी को हमेशा काम में हाथ बटाता है। जिसके कारण जोगेश्वरी देवी का अधूरा दांपत्य जीवन सुखी है। बड़ी बहु शांति देवी , पति राधेलाल के साथ दांपत्य जीवन सुख से बिताती है। लेखक लिखते हैं -

"मुन्शी राधेलाल क्या पूरा घर बँध गया था उनसे, उन्हें भी मुन्शी जी से खूब प्यार मिला बहुत लाड़ से रखा उन्होंने।"[58]

यह उद्‌धरण शांतिदेवी के सुखमय दांपत्य संबंध को स्पष्ट करता है। तवायफ कमलाबाई मुंशी राधेलाल से प्रेम करती है, लेकिन शांतिदेवी को कमलाबाई से जलन नहीं है। इस बारे में जब कमलाबाई उनसे पूछती है, तब शांति कहती है -

"काहे का शक । शह वह करे जिसे कुछ मिलता न हो। मुझे तो शुरू से ही इतना कुछ दिया जाता रहा, मैंने तो खुद उनसे कहा था कि आपके यहाँ जाया करे क्या एक बार भी नहीं गए।"[59]

यहाँ शांति को अपने पति पर पूरा भरोसा है। वह अपने पति से खुश है। क्योंकि उसे अपने पति से बहुत प्यार मिलता है और इसी वजह से झगड़ा, शक करना वह जानती ही नहीं है। जब राधेलाल देश की स्वतंत्रता के लिए जेल जाते हैं। तब वह उनसे कोई शिकायत नहीं करती है। अपने बच्चे तथा परिवार के और सदस्यों के साथ घुलमिल कर ही रहती है। शांतिदेवी और राधेलाल का बेटा मोहन भी सुखी-दांपत्य जीवन का प्रतिनिधित्त्व करता है। पत्नी ओमी भी अपने देवर-सांस को हमेशा आदर सम्मान देती है और सब का खयाल रखती है। उन पति-पत्नी में कभी झगड़ा नहीं होता। ओमी के पास समाधानी वृत्ति तथा सादगी है और मोहन परम संतोषी, इमानदार व्यक्ति का प्रतिनिधित्त्व करता है। इस तरह पति-पत्नी दोनों भी समझदार होने से उनका दांपत्य संबंध सुखी जीवन का प्रतिनिधित्त्व करता है, जो आजकल कम दिखाई देता है।

उपर्युक्त प्रकार से मिश्र जी ने सुखी-दांपत्य जीवन के संबंध का यथार्थ वर्णन किया है। लेकिन आगे चलकर परिस्थितिवश इनमें से कुछ सुखी दांपत्य विषम दांपत्य बने हैं।

3.19.4 **विषम दांपत्य संबंध :-**

विवाह संस्था के कारण स्त्री-पुरूष दांपत्य जीवन में प्रवेश करते हैं। एक-साथ रहकर राजी खुशी से संसार करना ही सफल दांपत्य जीवन का मूल है। लेकिन कभी-कभी विचारों में भिन्नता, नारी की पुरूष समानाधिकार की माँग, पुरूष का अहं, अनमेल विवाह आदि से पति-पत्नी का दांपत्य संबंध विषम बनता है और दुखमय बनता हैं। जिससे दोनों विवश, मजबूर, घुटनभरी जिंदगी बिताते हैं। परिस्थितिवश समझौता न होने के कारण दोनों विवाह विच्छेद करते हैं। इस तरह विषम दांपत्य जीवन के लिए स्त्री-पुरूष दोनों ही जिम्मेदार हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में विषम दांपत्य संबंध को यथातथ्य रूप में चित्रित किया है।

लाल पीली जमीन का नायक केशव तथा उसकी पत्नी का जीवन सुखमय नहीं है। केशव के विवाहपूर्व प्रेम को लेकर पति-पत्नी में झगड़े होते हैं। इसी उपन्यास की मालती का अधेड़ विधुर सर्वेश के साथ अनमेल विवाह उसे सुख चैन से नहीं रहने देता है। वह अंदर से बहुत दुखी है। दिखाने के लिए वह साजशृंगार करके ऊपर से ही हँसती है। वह अंदर से अकेली है। अधेड़ सर्वेश के साथ रहकर खुद को बूढ़ी महसूस करती है। इस तरह केशव और मालती का दांपत्य जीवन विषम बना है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास का दांपत्य सुवर्णा और रमेश सुखी नहीं है। सुवर्णा के अन्य मित्रों से

आत्मीक संबंध आगे बढ़े हैं, यह शक रमेश को है। इसी कारण वह सुवर्णा को उन से मिलने के लिए सक्त मनाई करता है। उसके मित्रों ने भेंट रूप में दी हुई वस्तुएँ उससे छीनता है। इससे दोनों का झगड़ा होता है। सुवर्णा कहती हैं -

"तुम कौन होते हो इन चीजों को लेनेवाले । रमेश आगे कहता तुम्हारे लिए न सही दुनिया के लिए तो मैं तुम्हारा पति हूँ।"[60] आखिर में रमेश सुवर्णा को थप्पड़ लगाकर पिस्तौल का भय दिखाकर उसे मित्रों से मिलने के लिए मना करता है। इसी वजह से सुवर्णा और रमेश में चार महिने तक दुनिया को दिखाने लिए औपचारिक बातचीत जारी है। इस तरह मिश्र जी ने इस विषम दांपत्य संबंध को हमारे सामने रखकर आधुनिक शिक्षित मध्यवर्गीय विषम दांपत्य जीवन को स्पष्ट किया है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में छोटू का दांपत्य जीवन विषम दिखाया है क्योंकि उसकी पत्नी छोटू के विदेशी संस्कृति के नुसार न चलकर अपने विचारों से ही चलती है। इसी वजह से छोटू उस पर गुस्सा करता है, छोटू का शराब पीना पत्नी को पसंद नहीं। जिससे दोनों का जीवन विषम बन जाता है, छोटू पिता से कहता है -

"आइ कान्ट लिव विथ दैट बिच।"[61] इस तरह छोटू का दांपत्य संबंध विषम दिखाई देता है, जो आधुनिक युवा दांपत्य का प्रतिनिधित्व करता है। मिश्र जी अपने उपन्यासों में उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा विषम दांपत्य जीवन का वास्तविक दस्तावेज सशक्त रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।

3.19.5 **वेश्या संबंध :-**

समाज मे वेश्याओं का अस्तित्त्व पुरानकाल से लेकर आधुनिक काल में भी रहा है। वेश्या समाज की वह नारी है, जिसके पास पुरूष अपनी यौन अतृप्ति की प्यास मिटाने जाता है। कुछ मनोरंजन का अस्वाद लेकर अपनी उलझी हुई त्रस्त जिंदगी को चंद घंटो के लिए सुखद बनाता है। कुछ साहित्यकार वेश्या के कलंकित रूप को स्पष्ट करते हैं, तो कुछ उस कलंकित रूप को नष्ट करने प्रयत्न कर मानवतावादी दृष्टि से उसका वर्णन करते हैं। मिश्र जी समाजोन्मुख, मानवतावादी लेखक हैं, उन्होंने पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में वेश्या संबंध का यथार्थ वर्णन किया है। कमलाबाई नामक गानेवाली, सुंदर वेश्या का पाँच आँगनोवाला घर के व्यक्तियों से जो संबंध है वह लेखक ने स्पष्ट किया है।

पाँच आँगनोवाला घर की जोगेश्वरी देवी का बेटा राधेलाल स्वतंत्रता संग्राम में शामिल न हो, इसलिए कमलाबाई को दावतनामा देकर घर पर मुजरे के लिए बुलाती है। राधेलाल कमलाबाई के प्रेमपाश में फँस जाए ऐसी मन्शा जोगेश्वरी की थी। दावतनामा मिलते ही कमलाबाई जोगेश्वरी के घर आती है। घर आते ही कमला घर की औरतों के साथ अंदर बैठकर गप्पे मारकर गाना गाकर औरतों को खुश करती है। कमलाबाई खासकर राधेलाल की पत्नी शांतिदेवी से आत्मीयता से बातें करती है। बाद में महफ़ील में चली जाती है।

राधेलाल के सुराजी बनने के बाद कमलाबाई शांती से फिर मिलने आती है और उनकी हिम्मत बढ़ाकर परिवार पर आए आर्थिक संकट के कारण कुछ पैसे देती है। इस तरह पैसे लेनेवाली तवायफ पैसे देकर किसी परिवार की मदद करके इस परिवार से वात्सल्यमयी संबंध रखती है।

यहाँ लेखक ने सन 1946 ई.से सन 1950 ई. तक के काल में स्थित वेश्या संबंध को स्पष्ट किया है। तब वेश्या के कला की कदर की जाती थी। उसे कोई बुरी नजर से नहीं देखता था। अन्य परिवार की औरतों के साथ बातें कर सकती थी। जो आज की वेश्याएँ नहीं करती हैं।

कमलाबाई राधेलाल के देशभक्ति पर फिदा होकर उनसे आदरयुक्त प्रेम करती है। लेकिन राधेलाल उससे कोई संबंध नहीं रखते हैं। कमलाबाई कलाप्रेमी है, वह अपना शरीर न बेचकर सिर्फ कला दिखाकर लोगों का मनोरंजन करती है। आगे उसे एक विवाहित पुरूष से प्रेम हो जाता है लेकिन इनके मिलने से उसके विवाहित जीवन में आग न लग जाय, यह सोचकर वह अकेली रहना पसंद करती है।

सन 1960 ई. से सन 1975 ई. तक की पीढ़ी अलग ही थी। जैसे राधेलाल का जमाई कमलाबाई के कोठे पर जाकर अन्य वेश्या से गीत सुनकर उसपर पैसे उछालता है। लेकिन कमला उसे पहचान कर, समझाकर घर भेजती है।

इस तरह मिश्र जी ने समाज में स्थित कमलाबाई जैसे वेश्याओं का वर्णन यहाँ किया है, जो कला को ही अपना सब कुछ मानकर कला के प्रति अपनी कर्तव्य भावना निभाती है। वात्सल्यमयी संबंध बनाकर टूटे हुए घर को तथा गलत रास्ते पर चलने वाली नई पीढ़ी को उभारने का प्रयत्न वह करती है। इस तरह कम्मो उन वेश्याओं का प्रतिनिधित्त्व करती है जो अपनी अच्छाइयों से समाज में आम वेश्या से अलग है।

इस तरह मिश्र जी समाज को अलग-अलग पहलुओं के साथ चित्रित करते हैं।

निष्कर्ष :-

गोविंद मिश्र सजग रचनाकार हैं। उन्होंने समाज जीवन की सच्चाई का साक्षात्कार हमें कराया है। समाज के वर्गो ने उच्चवर्ग कुछ मात्रा में भ्रष्ट है। यह मिश्र जी ने पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है। तथा निम्न उच्च वर्ग के मनोहर लाल जी जैसे लोग खानदानी रईसों जैसे जीवन बिताकर जमाने के साथ चल रहे हैं। मिश्र जी खुद मध्यवर्गीय है। इसी कारण उपन्यासों में वे मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण करने में सफल हुए हैं। लाल पीली जमीन, तुम्हारी रोशनी में बोस साहब का, सुवर्णा का, राजन का परिवार उच्च मध्यवर्गीय हैं। सुवर्णा, और राजन के परिवार पर कुछ मात्रा में विदेशी प्रभाव है, तो राजन के परिवार को मिश्र जी ने अर्थप्रिय दिखाया है। वह अपना चेहरा का शुक्ला मध्य-मध्य वर्ग का है। तो अन्य उपन्यासों के पात्रों में अनंत, मोहन आदि बाबू लोग शहरी समस्या से गुजर कर अपनी जिंदगी बिता रहे हैं। निम्न मध्य वर्ग में मास्टर कंठी, मास्टर कौशल, केशव का परिवार आदि कस्बाई क्षेत्र की हर समस्या का सामना करते हुए दिखाई देते हैं।

खांदिया मुहल्ले के छोटे मोटे धंदे करनेवाले कुछ लोग निम्नवर्गीय हैं तो मिखारी, चोर निम्न-निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्त्व कर पाठकों की सहानुभूति पाने के सफल हुए हैं। इस तरह मिश्र जी ने तीनों वर्गों का यथार्थ वर्णन किया है।

मिश्र जी के लाल पीली जमीन के कस्बाई क्षेत्र के लोग तथा पाँच आँगनोवाला घर की जोगेश्वरी और परिवार के अन्य सदस्य, रामाधार जैसे परंपराप्रिय, अज्ञानी, अंधविश्वासी लोगों के कारण समाज में जातीयता बढ़ती है। केशव, केशव के पिता में जातीयता कूट-कूट भरी है, मुहल्ले में जातीयता के नाम पर गुट बनाए जाते हैं। जिसका फायदा राजनेता उठाकर अपनी गिरती हुई सरकार को बचाने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह मिश्र जी समाज में स्थित जातीयता को स्पष्ट करते हैं। कुछ मात्रा में जातीयता के कारण समाज में अन्याय-अत्याचार होते रहे हैं जो लाल पीली जमीन, पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में चित्रित है। नीची जातवाला शिवहरे का ऊँची जातवाले केशव के पिता को तथा बेगुनाह कैलाश को खुद तथा औरों से पिटवाना और अंग्रेज सरकार का जनता पर अन्याय करना, कुछ राजनेता के गलत फैसले के कारण छात्रों का आत्मदाह करना आदि घटनाएँ अन्याय/अत्याचार की द्योतक हैं। मिश्र जी स्वतंत्रतापूर्व व स्वातंत्र्योत्तर समाज में होते अन्याय को विस्तृत रूप से हमारे सामने रखने में सफल हुए हैं।

आज की शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी माध्यम, कंपीटीशन को स्कूल मे पी.टी. और खेलों को महत्त्व दिया जाता है। कुछ आदर्श अध्यापक मास्टर कौशल, मास्टर कंठी की तरह छात्रों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा दे रहे हैं। फिर भी कुछ का पढ़ाई को फालतू समझते हैं। इसी कारण शिवमंगल, कल्लू, सुरेश तथा सन्नी चाचा, बिट्‌टो शिक्षा को महत्त्व नहीं देते। आज कुछ राजनीतिज्ञों की कूटनीति के कारण छात्रांदोलन हो रहे हैं। जिससे शिक्षा व्यवस्था बिगड़ रही है। मिश्रजी उपन्यासोंद्‌वारा आज की शिक्षा व्यवस्था की सद्य स्थिति को स्पष्ट करते हैं। खून, बलात्कार, पीटना आदि के रूप में निम्न वर्ग का शोषण समाज में हो रहा है जिसका यथार्थ वर्णन मिश्र विवेच्य उपन्यासों में करते हैं। साथ ही विवेच्य उपन्यासों के निम्न वर्ग, मध्य वर्ग के कुछ पात्र तथा परिवार दिन-रात कष्ट कर, पैसे बचाकर आर्थिक विपन्नता का सामना करते हैं। फिर भी अनमेल विवाह अर्थ की अन्य समस्याएँ निर्माण हो रही हैं।

मिश्र जी ने पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का यथार्थ वर्णन कर जनता के देशप्रेम को दिखाया है। साथ ही दफ्तरी माहौल तथा शासन व्यवस्था में केशवदास, राजन जैसे अफ़सर भ्रष्ट दिखाई देते हैं। इसी वजह से कुछ मात्रा में व्यवस्था भ्रष्ट हो रही है। व्यसनाधीनता के कारण कुछ मंदिर, साधुओं के मठ भंग, चरस, गांजे के अड्डे बन गए हैं। तो सुवर्णा जैसी आधुनिक नारी शराब पीना आम बात समझती है। मिश्र जी ने व्यसनाधीनता के जरिए भारतीय संस्कृति को नष्ट होते दिखाया है जो सभ्य समाज के लिए ठीक बात नहीं है। इससे सुरेश, कल्लू, छोटू जैसे युवावर्ग आक्रमक बनकर अपने आपको तथा समाज को बिगाड़ रहे हैं। लेकिन आज के कुछ प्रगतिशील युवा दिन रात पढ़ाई कर आगे बढ़कर अपनी जिम्मेदारियाँ निभाना चाहते हैं - जैसे रेश्मा, शैलजा, बड़े, केशव, बंटू आदि। इस तरह मिश्र जी ने युवाओं के आक्रमक,

प्रगतिशील रूप को यथार्थ के साथ चित्रित कर पाठकों के सामने रखा है।

विदेशी प्रभाव के कारण अंग्रेजी भाषा का उपयोग, स्वच्छंद मुक्त प्रेम, संकुचित वृत्ति बढ़ रही है जिससे उपन्यासों के कुछ पात्र विदेशी संस्कृति के हिमायती बने हुए दिखाई देते हैं। इसी कारण ही समाज में आधुनिक साधनों का आकर्षण बढ़ रहा है। सुवर्णा, राजन के परिवार में हर एक आधुनिक वस्तु है इसी कारण श्याम, ओमी जैसे लोग ऐसी वस्तुओं को अपने भी घर में लाने की प्रबल इच्छा रखते हैं . और हमेशा दौड़-धूप करते रहते हैं। इस तरह मिश्र जी आज के दिखावटी जीवन को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

मिश्र जी ने वह अपना चेहरा उपन्यास के जरिए दिल्ली शहर के सांस्कृतिक माहौल को दिखाया है। तो अन्य उपन्यासों के जरिए उत्सव, पर्व, त्यौहार मनाने वाले शौकिन समाज की संस्कृति को स्पष्ट किया है। साथ ही समाज में स्थित विवाह संस्था के जरिए मिश्र जी ने बहुविवाह की त्रासदी का वर्णन तथा अंतर्जातीय विवाह की तरफ समाज की दृष्टि शुक्ला के माध्यम से तो मालती का अनमेल विवाह, विलंबित विवाह के कारण विवाह संस्था में होने वाली धोकेबाजी को जादवजी के जरिए तथा विवाह विच्छेद से विवाह बंधन शिथिलता को दिखाकर आज की विवाह संस्था की सद्यस्थिति को सामने रखा है।

मिश्र जी ने परिवार संस्था में जोगेश्वरी देवी के परिवार को आदर्श संयुक्त परिवार के रूप में वर्णित किया है। तो मास्टर कौशल, केशव, सुवर्णा, राजन, छोटे, मोहन आदि के एकल परिवार की अलग-अलग समस्याओं को सामने रखकर आज की एकल परिवार की संस्कृति को दिखाया है। जिससे मनुष्य अकेला पड़ता जा रहा है।

मिश्र जी ने स्त्री-पुरूष के आत्मीक संबंधों को शुक्ला-रचना, अनंत-सुवर्णा, राजन-ओमी के जरिए इस वासनारहित संबंध को स्पष्ट कर इस संबंध का विकृत रूप यौन संबंध द्वारा प्रस्तुत किया है। इस तरह का यौन संबंध रचना केशवदास के साथ रखके अपनी पदोन्नति पाती है। तो सुरेश, कल्लू, पंड़ित जैसे लोग बलात्कार कर अपनी यौन प्यास बुझाते हैं। ऐसे संबंध समाज में अन्य कुप्रवृत्तियाँ निर्माण कर रहे हैं जो ठीक बात नहीं है। मिश्र जी शांतिदेवी - राधेलाल, ओमी-मोहन के सुखमय दांपत्य का आदर्श हमारे संमुख रखकर ऐसे संबंधों की नीवं पति-पत्नी की आपसी समझदारी बताते हैं जो एक सत्य है। साथ ही स्त्री-पुरूष का अहं, अनमेल विवाह, नारी की पुरूषसमानाधिकार की माँग से पति-पत्नी संबंध विषम बनते हैं। सुवर्णा-रमेश, छोटू-छोटू की पत्नी के विषय दांपत्य संबंध अंत का विवाह विच्छेद से होता है। इस तरह मिश्र जी विषम दांपत्य संबंध का अंत विवाह-विच्छेद बताते हैं जो दोनों के लिए ठीक बात है। मिश्र जी कमलाबाई वेश्या के पाँच आँगनोवाला घर के साथ वात्सल्यमयी संबंध को स्पष्ट कर, उसके कलाप्रिय रूप का यथार्थ के साथ वर्णन कर स्वतंत्रतापूर्व की वेश्या और आज की वेश्या के संबंध को प्रस्तुत करते हैं।

मिश्र जी ने उपर्युक्त पहलुओं के आधार समाज का कोना-कोना छान कर विवेच्य उपन्यासों में समाज जीवन को समग्र रूप में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ संकेत

1. गोविंद मिश्र,लाल पीली जमीन, पृ. 130
2. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 203
3. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 60
4. वही, पृ. 18
5. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 46
6. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 25
7. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 42
8. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 22
9. वही, पृ. 184
10. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 18
11. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 184
12. वही, पृ. 284
13. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, पृ. 97
14. गोविंद मिश्र, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 37
15. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 291
16. वही, पृ. 110
17. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 201
18. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 270
19. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 46
20. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 154
21. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 185
22. वही, पृ. 147
23. रामजी तिवारी, लेख - पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 2
24. डॉ.प्रेमशंकर, लेख - पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 1
25. गोविंद मिश्र, लाल पीली जमीन, पृ. 134
26. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 33
27. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, लेख उपन्यासकार गोविंद मिश्र एक मूल्यांकन, पृ. 6

28. गोविंद मिश्र, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 171
29. गोविंद मिश्र, लाल पीली जमीन, पृ. 150
30. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 17
31. वही, पृ. 43
32. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 79
33. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 49
34. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 184
35. वही, पृ. 184
36. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, पृ. 91
37. गोविंद मिश्र, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 31
38. वही, पृ. 221-222
39. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 75
40. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 164
41. वही, पृ. 188
42. डॉ.राम आहूजा, भारतीय सामाजिक संस्था, पृ. 109
43. गोविंद मिश्र, लाल पीली जमीन, पृ. 20
44. वही, पृ. 154
45. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 62
46. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 210
47. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 25
48. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 133
49. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 184
50. वही, पृ. 281
51. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 15
52. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, लेख : उपन्यासकार : गोविंद मिश्र एक मूल्यांकन, पृ. 9
53. गोविंद मिश्र, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 167
54. डा.वीणा गौतम, आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना का स्वरूप, पृ. 132
55. गोविंद मिश्र, वह अपना चेहरा, पृ. 16
56. वही, पृ. 56

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

57. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 26

58. गोविंद मिश्र, पाँच आँगनोवाला घर,पृ. 64

59. वही, पृ. 64

60. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 165

61. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 252